सज्जाद-सुम्बुल

नाटक।

" करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै सोय ?
रोपै पेड़ बबूल का, आम कहां से होय ?"—कबीर।

" هر آنکه تخم بدی کاشت و چشم نیکی داشت *
دماغ بیهوده پخت و خیال باطل بست * "

दूसरी आवृत्ति।

पटना—बिहार-बन्धु छापाखाना, बांकीपुर।
१८८३।

भूमिका।

शरत और सरोजिनी को हिन्दुस्तानी पोशाकें पहना कर अपने मुल्कवालों को खिदमत में भेजता हूं। देखा चाहिये इस मुल्क में इन की कितनी इज़्ज़त होती है।

केशव राम भट्ट।

नाटक के व्यक्ति ।

पुरुष ।

अब्बास	एक जवान लड़का जो लड़कपन से शमशेर बहादुर के यहां पला है ।
सज्जाद हुसैन	ज़मींदार ।
शमशेर बहादुर	ज़मींदार ।
काली प्रसाद	सज्जाद के दीवान ।
हेमन लाल	शमशेर बहादुर के मुख्तार ।
नरसिंह	सज्जाद के मित्र ।
हैदर	ऐ०
हेमचन्द्र चक्रवर्ती	ऐ० (वैज्ञानिक ।)
हुसैनी	सज्जाद का नौकर (लड़का ।)
बसीटा	एक बदमआश ।
फ़ीरू	बसीटा का साथी (चोर ।)

नौकर, कौन्स्टेबल, गोरे, वग़ैरह ।

स्त्रियां।

कुम्कुम	एक जवान लड़की जो सज्जाद के यहां लड़कपन से पली है।
गुलशन	सज्जाद की बहन।
महमूदा	सज्जाद की सोतेली मा।
नसीमन	शमशेर बहादुर की बीबी।
हलीमा	शमशेर बहादुर की रांड भावज।
करिमनी	शमशेर बहादुर की कुटनी।

दाई वग़ैरह।

——

सज्जाद सुम्बुल।

पहला अंक।

पहली झांकी।

पटना, बाक़रगंज, सज्जाद का डेरा।

सज्जाद मेज़ पर चिट्ठी लिख रहा है।

सज्जाद। (चिट्ठी लिख कर) बड़ी उजलत में ख़त को लिखा है। ज़रा पढ़ तो जाऊं।

(चिट्ठी का पढ़ना।)

बांकीपुर,
४थी मार्च, १८७४।

हमारी प्यारी सुम्बुल,

तुम लोगों की ख़ैर श्रो आफ़ियत सुन के बहुत ख़ुश हुआ। अला-हाजुल-क़यास मैं भी यहां ख़ुश हूं। आइन्दे सनीचर को अन्जुमन "सायन्टिफ़िक एसोसियेशन" मुनक्क़िद होगी। उस

दिन बाबू हेम चन्द्र चक्रवर्ती, जो पटने के आलिमों में से हैं, इस मज़मून का एक लेकचर पढ़ेंगे कि "आदमी बन्दर की औलाद हैं"। मुम्किन है कि उस दिन बड़ी बहस हो। क्यों कि मीर-मज्लिस इस राय के बिल्कुल बरखिलाफ़ हैं। अभी तक मैंने अपनी राय कोई क़ायम नहीं की है। आखिर अन्जुमन में जो बात तय होगी वह भी तुम्हें मैं लिख भेजूंगा। मैं क़यास करता हूं कि इस के बाद वाली अन्जुमन में मुझी को जवाब-मज़मून लिखना पड़ेगा।

गुलशन ख़ल्ती का क्या हाल है? अब लिखने पढ़ने में जी लगाती है या नहीं?

क़हत जैसा कि हमलोग ख़याल करते थे वैसा नहीं है। फिर सरकार की तरफ़ से भी इस के दूर करने के सामान हो रहे हैं। लेकिन जितना खर्च हो रहा है, उतना बन्दोबस्त नहीं होता। कारपरदाज़ लोग बीच ही में खा जाते हैं। अपने गांवों में अगर कोई भूखों मरता हो तो उस की ख़बर लेना, मख़्सूस औरतों और बच्चों की।

तुम्हारा ख़ैरख़ाह
सज्जाद हुसैन।

मुकर्रर ईकि,

मैं यहां हमेशा किसी न किसी काम में उलझा रहता हूं। सब बातें हमेशा याद नहीं रहतीं। तुम लोगों को जिन चीज़ों की ज़रूरत हुआ करे मुझे लिख भेजा करो। मैं उसी वक़्त ख़रीद-वाके भेज दिया करूंगा।

सज्जाद।

(चिट्ठी का मोड़ना और बंद करना।)

यहां आओ।

(एक आदमी का प्रवेश।)

इस ख़त को डाकख़ाने में लगा आओ।

आदमी। बहुत अच्छा।

[आदमी चिट्ठी ले कर गया।

सज्जाद। सुम्बुल फ़िलहक़ीक़त बड़ी होशियार लड़की है कहां क्या हो रहा है, और क्या नहीं बग़ैर मालूम किये उसे चैन ही नहीं। छ सात बरसों से जो बराबर साथ है इस वजह से सचमुच सगे भाई की सी मुहब्बत हो गई है। हरचंद वह हमारी कोई भी नहीं और गुलशन तो भला बहन ही है, लेकिन न मालूम क्यों मैं दोनों को एकसां प्यार करता हूं। हैं भी बेचारी दोनों बड़ी सीधी, लेकिन गुलशन में अभी लड़कपन के सबब से अल्हड़पन है, और सुम्बुल तो माशा अल्लाह होश गोशवाली और बड़ी नेक लड़की है।

[हुसैनी का प्रवेश।]

हुसैनी। मीयां, को तो दो ठो आदमी आप से मुलाक़ात करे को दरोज्जे पर खड़े हैं।

सज्जाद। जा, बुला ला।

[हुसैनी का प्रस्थान।

[नरसिंह और हैदर का प्रवेश।]

सज्जाद। बंदगी भाई बंदगी, आओ बैठो।

(सलाम बंदगी कर के सब का बैठना।)

सज्जाद। आज किधर?

नरसिंह। यों ही तुम्हारी मुलाक़ात को आया हूं।

हैदर। भाई नाच देखने चलोगे? हम और नरसिंह तो जाते हैं। चलना हो तो चलो।

सज्जाद। नहीं, भाई मैं तो नहीं जाऊंगा। खैर तुम लोग कहां नाच देखने जाते हो? कहीं महफ़िल है क्या?

नरसिंह। अजी महफ़िल कैसी? यों ही कुछ वाहियात खुराफ़ात सी होगी। भाई सच कहता हूं मेरा भी जाने का इरादा न था, मगर देखो न ये ही हैदर कसमें दे दे कर ज़बरदस्ती खेंचे लिये जाते हैं।

हैदर। नहीं भाई नहीं, वाहियात नहीं है। बाबू राजप्रकाश सिंह के बेटे की शादी की महफ़िल है। ऐ वल्लाह बनारस और लखनऊ की जितनी मशहूर मशहूर रंडियां हैं, सब की सब बुलाई गई हैं। भाई सज्जाद, वल्लाह तुम भी चलो। देखो, ऐसा मौक़ा फिर नहीं कभी आनेका।

सज्जाद। नहीं यार, मुझे नाच देखने का चन्दां शौक़ नहीं।

हैदर। क्यों तुम नाच देखना या गाना सुनना बुरा समझते हो?

सज्जाद। नहीं एक बारगी बुरा तो नहीं कह सकता, लेकिन बिल्फ़ेल तो बुरा ही है। हमारे मुल्क के क्या शायर और क्या गानेवाले, दोनों इश्क़ के पीछे दीवाने हो रहे हैं। उन्हें जो मज़मून सूझता है, वह इश्क़ पर।

हैदर। क्यों जी, इश्क़ हक़ीक़ी की चीज़ें गानेवाले भी क्या तुम्हारे नज़दीक बुरे हैं?

सज्जाद। अजी गानेवाले की कौन पूछता है हमारी दानिस्त तो इश्क़ ही बुरा है, ख़ाह हक़ीक़ी हो या मजाज़ी।

नर० और है०। (हंस कर) ऐ सुबहान अल्लाह, भाई तुम ने तो कमाल किया। भाई, सच तो कहो, व्याह भी करोगे या नहीं?

सज्जाद। अस्तग़फ़िरुल्लाह, लाहौलवलाक़ूवत मैं व्याह

करूंगा? हरगिज़ नहो। कभी नहीं। ख़ैर यह जाने दो, यह तो बताओ कि जिस तौर से कि आज कल के गवइये या रंडियां गाती बजाती हैं, उस से सिवा बुराई के किसी भलाई का होना भी मुम्किन है? वही बुल्बुल वही गुल, वही बाग़ वही बहार, वही माशूक़ वही शराब, वही यूसुफ़ वही ज़लेखा, वही मजनू वही लैला,—मैं पैदाइश से बराबर एक ही बात सुनता आता हूं। अब जी उन्हें ख़याल भी करता हूं तो उनके नाम से जी घबराता है। भला तुम ही कहो, इन के सुनने से क्या फ़ाइदा?

नरसिंह। शायर क्यों अक्सर मज़मून इश्क़ पर बांधते हैं, इस की एक वजह है, यानी इन्सान की तबई ख़ाहिश इश्क़ की तरफ़ झुकती है।

[सज्जाद। हैवान की झुकती हो तो झुकती हो, पर इन्सान की क्यों झुकने लगी? ख़ैर इस की बहस क्या, अगर झुकती हो तो यह बुरी बात है। झुकने मत दो। क्यों कि ज़रा अपने मुल्क और अपनी हालत पर ग़ौर करो। यह वह वक़्त नहीं है, कि इश्क़ से दीवाने बने बन बन की ख़ाक छानते फिरें, जंगल और सहरा में भटकते फिरें। देखो तुम्हारे मुल्क की क्या हालत थी और क्या हो गई! तुम्हारा मुल्क किस के हाथ में है?] वह कैसे हैं और तुम कैसे हो? इंग्लैन्ड और फ़्रान्स की क्या हालत है, और तुम्हारे हिन्दुस्तान की कौन गत है?

नरसिंह। (हंस कर) तब देखो, बैठे क्या हो, एक काम करो बन्दूक़ चलाना सीखो।

सज्जाद। क्यों, इस की क्या ज़रूरत है? हम बुज़दिलों पर जो कमबख़्ती सवार है, उस से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती कि

दो सौ बरस—बल्कि तीन सौ बरस के अन्दर हमलोगों की हालत पलटे । लेकिन इस बात को खूब याद रखना चाहिये, कि जब तक हमलोग इसी बुरी हालत में हैं तब तक जो इश्क़ और ऐश को रवा समझेगा, वह नमकहराम — दगाबाज़— खुदगरज़— नफ़सपरस्त और अपनी मा हिन्दुस्तान का कपूत बेटा है ।

हैदर । इश्क़ भी न करे, और बंदूक़ भी न चलाये फिर लोग करें क्या ? क्या बैठे बैठे घास गढ़ें ?

सज्जाद । क्यों घास ही गढ़ना सिर्फ़ काम में काम है ? सब कोई मिलकर मुल्क की जिहालत की तारीकी दूर करने में कोशिश करें । मुल्क में ज़िराअत, कारीगरी, और सौदागरी की तरक़्क़ी करें । सब के दिलों में हिन्दुस्तान की भलाई करने की ख़ाहिश पैदा करावें । लेकिन आशिक़ों और अइयाशों से अलबत्ते ये बातें होनी मुहाल हैं ।

नरसिंह । देखो यह तुम्हारी कितनी बड़ी ग़लती है । जिसे जोरू जांता और लड़के बाले हैं, जितनी उसे मुल्क की मुहब्बत हो सकती है, मुम्किन नहीं कि उतनी किसी कुंआरे बाले की हो । अगर बादशाह ने किसी तरह का ज़ुल्म किआ या, कोई नामुनासिब टैक्स रअइयत पर लगाया तो उस की तकलीफ़ जितनी कि लड़के बाले वाले को होगी उतनी कुंआरे को हरगिज़ नहीं हो सकती । उसे क्या, वह तो "निहंग लाड़ला सदा सुखी ।"

सज्जाद । ठीक है, मगर—

हैदर (जेब से घड़ी निकाल कर) भाई नरसिंह ७ बज चुके । अब चलो । आज लेक्चर रहने दो । हमलोगों को बिसेसर के यहां भी तो जाना है । इन्शाह अल्लाह ताला और किसी रोज़ मियां सज्जाद से इस बात पर बहस की जायेगी ।

सज्जाद। अन्जुमन में इस बार यही मज़मून क्यों न दिया जाय ?

नर॰ और हैदर। हां यह तो खूब कहा।—ख़ैर तो अब हम लोग रुख़सत होते हैं।

सज्जाद। अच्छा भाई बन्दगी।

[सब का प्रस्थान।

—०:०:०—

दूसरी झांकी।

पटना, — बाग़।

[एक गवइयेका प्रवेश।]

गवइया।

गीत।

(ग़ज़ल रागिनी पीलू।)

अजब इस बाग़-रंगीं का तरक्क़ी पर ज़माना है,
शिगुफ़्त: गुल हैं बुलबुल जोश में महवे तराना है।
सरोदओ बरबतओ चंगओ रबाबओ जदओ अरगन से,
कहीं नौबत सलामी की, कहीं पर शादियाना है।
चमन में आके कुछ ऐसा खिला है गुनचये ख़ातिर,
कि सारा क़िस्सये रंज ओ अलम अपना फ़साना है।
कहीं अंगरेज़ हैं बाहम, कहीं अंगरेज़िनें बाहम,

दियारे हिन्द में अब औज पर जिनका ज़माना है।
खुशी से साथ अपने गुलरुखों के सैर करते हैं,
जो इनका तर्ज़-माशूकी, तो उनका अशिक़ाना है।
अजैब नाज़ औ अदा से महवि नग़मा अन्दलीपें हैं,
मुक़र्रर उनको गुल पर आज रंग अपना जमाना है।
हवाये सर्द है, साक़ी है, मुत्रिब है, मुग़न्नी है,
ज़मीं फ़र्शे ज़मुर्रद अब्र रहमत शामियाना है।
दिले रंजूर को क्यों कर हो फ़रहत सैर-गुलशन से?
गुलों को देख कर रोना भी हंसने का बहाना है।
न पूछो, हम सफ़ोरो! क्या हुई वह अपनी आज़ादी,
गिरफ़्तारे बला जब से हैं बरगश्ता ज़माना है।
न उम्मीदे रिहाई है; न है परवाज़ की ताक़त,
हमारे मुश्त पर का अब क़फ़स में आशियाना है!

सज्जाद का प्रवेश।

सज्ज०। अहा, क्या ठंढी ठंढी हवा बह रही है। ज़रा यहीं फिरूं।—नरसिंह और हैदर की बहस से सर में दर्द हो गया। (टहलना।) वाह क्या ख़ूब, ये क्यारियां क्या ख़ूबसूरत बनी हैं। सुबहान अल्लाह इन मेंहदी की टट्टियों को क्या सफ़ाई से तराशा है। मगर ये सब इन ही अंगरेज़ों की मिहरबानी है। चाहें ये अभी इस क़ायदे को बना सकते हैं कि ५ बजे से ७ बजे तक सिवा गोरे चमड़े वालों के कोई 'काले आदमी' इस बाग़ में न फिरने पावे। (आह भर कर) जिहालत हठधर्मी और तअस्सुफ़ की वजह से हम लोग इस बुरी हालत को पहुंच गये हैं। अगर हम लोग महज़ ख़ुदग़रज़ और नफ़्सपरस्त न होते तो इस गुलामी से कब ही रिहाई

पाये होते। लेकिन अफ़सोस है कि मुल्क की बिगड़ी हालत पर हफ़्ते में भी एक बार ग़ौर करने वाले इतने कम हैं कि उन का शुमार उंगलियों पर कर ले सकते हैं। मुल्क की तरफ़ से बेपरवाई का मरज़, या खुदा, कब दफ़ा होगा। इस का कौन इलाज हो!— (आह भर कर) हिन्दुस्तान की क़िस्मत कुछ अच्छी थी, कि अंगरेज़ों का यहां क़दम आया। खुदावन्दा! अंगरेज़ों की सल्तनत कुछ दिन तक और क़ायम रख। अगर इस मुल्क की तरक़्क़ी हुई तो इन्हीं की बदौलत होगी। इस हालत में जो ब्रिटिश सल्तनत के बरख़िलाफ़ तलवार खैंचने की सलाह दे, वह नादान है, बेवकूफ़ है, बल्कि मुल्क का दुश्मन है।

[हेमचन्द्र का प्रवेश।]

सज्जाद। अख़्ख़ाः, आइये तशरीफ़ लाइये। आप भी फिरने को आये हैं।

हेमचन्द्र। हां फेरने को भी आया है, और आप से मोलाकात कोरने भी आया है।

सज्०। (हंसके) भला यह आप को किस तरह मालूम हुआ कि मैं यहां आया हूं?

हेम०। हाम तो आबी आप का बाग़ा में गोया था, वहां एक चाकोर बोल दिया जो आप होयां आया है।

सज्०। ख़ैर, आप लेकचर अपना लिख चुके?

हेम०। हां आबी खातम होने होने परे है।

सज्०। क्यों बाबू, तो क्या हम लोग सचमुच बन्दर की औलाद हैं?

हेम०। (मुस्कुराकर) तो इश में क्या आप को आबी तक

शन्देहो हाय? हाम लोग आलवत्त बांदोर का लेड़का बाला हाय। एश बात का ओआश्ते हाम हाजार हाजार प्रमाण देने पारता है। हाम आबी आप को बुझाय देने पारेगा। देखिये आदमी जो बांदोर—

सज्०। (आप ही आप) अल्लाह, यह तो गाड़ी चली। (प्रकाश) इज़्ज़त, आज मुआफ़ कीजिये। आज, न मालूम क्यों हमारे सर में बड़ा दर्द है। कल में जी लगाके सुन लूंगा।

हेम०। ऊ कूच हाय नाई। आप का माथा में एकटू गैस ऊठा है, एकटू फिरने शे आबी शब भाग जायगा। अच्छा तो देखिये, आदमी जो—

सज्०। अच्छा आप अगर यह सुबूत कर दें कि अंगरेज़ बंदर हैं, तो मैं आप का बड़ा मम्नून इहसान हूंगा।

हेम०। यह तो कूच बड़ा मूश्कील बात नेई है। यह तो ऐसे करे

आदमी बांदोर का औलाद है,

इंगराज़लोग आदमी है,

ईश लिये इंगराज़ लोग बांदोर का औलाद है।

ई बात तो युक्ती शास्त्र का प्रथम शूवी शे ही शाबूत हुआ। आबी शूनिये—

सज्०। फिर लफ़्ज़ "औलाद" को क्यों रहने दिया? आप क्या इस बात को नहीं सुबूत कर सकते कि "अंगरेज़ बंदर हैं?"

हेम०। आप को इंगराज़ लोग शे ईश्र कादर बिद्वेश क्यों है? ऊ लोग तो बहुत अच्छा आदमी होता है। ऊ लोग देखिये बिद्या का केशा उन्नति किया, कीत्ता ईश्कूल पाठशाला बानाया। ऊ लोग तो बेश सिविलाइज़्ड आदमी हाय।

सज्जाद। जी हां ठीक है। आज कल आप अख़बार देखते हैं या नहीं? अनंतपुर के मजिस्ट्रेट का हाल कुछ सुना है?

हेम०। हाम ईश बात की जावाब नाईं देने शोकता, किन्तु- एक किंवा दो आदमी के खाराप होने शे शमश्ती इंगराज़ जाति को किंवा इंगराज़ गवर्नमेन्ट को खाराप कोहा बड़ा दोष है, अन्याय है। युक्ती शास्त्री का विरुध होता है।

सज्जाद। ख़ैर और सुनिये—

हेम०। आप देखिये बिज्ञान का तारावकी होने शे ऊ लोग आर आच्छा हो जायगा। आबी शूनिये आदमी का आर बांदीर का जीतना किशिम——

सज्जाद। हज़्रत, रात हो गई, चलिये रात अंधेरी है, जल्दी चलें।

हेम०। अच्छा चौलिये, जाते जाते ही राश्ता में आप को भाला प्रकार शे बूझाय देगा। आदमी जो बांदोर का अवतार है, ई शत्ती ही है, शो—

सज्जाद। मगर जनाब आदमी के तो दुम नहीं होती, क्या बंगाले में क्या ह हा हा हा—

हेम०। छे छे छि, आप ईश बिद्या का बात में हांशी ठाहा कोरता है?

[उठ के प्रस्थान।

सज्जाद। (शरमा के) जी नहीं, कुसूर हुआ कुसूर हुआ, मुआफ़ कीजिये, आप को मेरी क़सम—

[पीछे पीछे सज्जाद का भी प्रस्थान।

—

तीसरी झांकी।

बिहार, खानकाह, शमशेरबहादुर का मकान।
शमशेरबहादुर चारपाई पर सोये लिहाफ़ ताने
सटक सड़सड़ा रहे हैं, और एक नौकर पाओं
दाब रहा है—हाथ जोड़े सर नीचा
किये अब्बास सामने खड़ा है।

शम०। अबे इस पांव को दाब, इस पांव को। बहरा है क्या? ज़ोर से रे, ज़ोर से। आज भर पेट खाया है कि नहीं? अह हा हा हरामज़ादे ने हमारी जान ली, लो हमारी जान। (उठ के और नौकर को एक तमाचा जड़ के) सूअर हरामज़ादा दो बरससे हमारे यहां काम कर रहा है, अभी तक हराम के पिल्लेने पांव दाबना नहीं सीखा है। (नौकर आंसू पीकता है।)—हां हां वहीं वहीं। ज़रा और ज़ोर से। (बीच बीच में सटक सड़सड़ाता जाता है। आंख बंद कर के) हां देख तो ऐसही, अब तेरा महीना बढ़ा दूंगा। आः (कुछ देर के बाद) क्यों रे, करिमनी बुढ़िया अंबेर गई?

नोकर। आोकी जाये बड़ा देड़ हुआ, सड़काड़।

अब्बास। मुझ को क्या हुक्म होता है? मुझे क्या कल ही चला जाना पड़ेगा।

शमशेर। हां, कल सुबही नूर के तड़के तुम यहां से चले जाओ। तुम्हें आज तक मैंने अपने पास से खिला पिला पोस पाल के इतना बड़ा किया, अब तुम जवान हुए, जैसे चाहो, वैसे अपना कमा खाओ। मैं कहां तक खिलाता रहूं। देखो सिर्फ़ तुम्हारी वजह से हमारे बहुत रुपये खर्च हुए हैं। तुम्हारे बाप कुछ हमारे

पास छोड़ भी तो नहीं गये कि तुम्हें उससे और खिलाऊं पिलाऊं — सो अब रोने कलपने से क्या होता है ?—रोने से क्या आप ही आप रुपये की थैली थोड़ी ही तुम्हारे पाओं पर आ पड़ेगी ?

अब्बास । जी, रुपये के लिये नहीं रोता हूं। (आंसू पोछ कर) आप के ज़ेरसाये आज तक पला हूं। अब आप लोगों की ख़िदमत छोड़नी पड़ती है, इसी से दिल उमड़ा आता है।

शमशेर । ख़ैर तो अब रुख़सत होओ । सुबह को भी शायद मुलाक़ात हो। क्यों कि, भाई जानते ही हो, आंख हमारी ज़रा देर से खुलती है। हमेशा काग़ज़ पत्तर का देखना सुनना, इस के अलावे और बहुतेरे कामों में दिन रात मशगूल रहता हूं। इसी से जी भर रात को सो नहीं सकता। बस वही सुबह के वक़्त ज़रा झपकी सी लग जाती है।

नोकर । (आप ही आप) अ: झूठ बोलना भी तो थोड़ा क्या ? रात दिन बेचारे कामे काज में तो फंसे रहे हैं। काम काज तो बस यही है कि दिन भर बैठे बैठे गड़गड़ गड़गड़ सटक सड़सड़ाना, और सांझ भई कि खटिये पड़ थाके पड़े, और पैर टिपवाने लगे, और भर रात—। जो थप्पड़ माड़िस है कि अभी तक गाल लहड़ रहा है।

अब्बास । (मुसुक कर) तब अब रुख़सत होता हूं। आप के सामने जो जो बेअदबियां और गुस्ताख़ियां हुई हों, मुआफ़ कीजियेगा ।

[गया ।

शमशेर । (उठ कर) देख तो आ गोश्त तय्यार हुआ। जा जल्दी जा, जा जल्दी। जाता है कि नहीं।

नौकर। (जाता जाता आप ही आप) उड़ के जायें क्या? बड़े आदमियों को अल्लाह मीयां एक दफे गड़ीब बना दें, श्रोड़ हम सबके ऐसा मिहनत कड़ के कमाय पड़े तब मज़ा मालूम होय।

[गया।

[दूसरी तरफ़ से घसीटा का प्रवेश।]

शमशेर। क्यों जी घसीटा, अच्छी तरह से देख सुन लिया न? देखो पहचान लोगे न?

घसीटा। मियां ई का कहते हो? आप के अकबाल से जिस को हम एक बार देख लिया उस को हम हजम ही कर लिया।

शम०। नज़र पर रखना। कहां जाता है, क्या करता है, सब ख़याल रखना, समझ गये न?

घसीटा। हूं ऊं ऊं हूं।

शम०। दो दो चार चार रोज़ के बाद हमें ख़बर देते रहना। समझे न? बग़ैर हमारे हुक्म के एक बात भी ज़ियादे न करना। देखो, जैसे जैसे बतला दिया है, सब याद है न? (घसीटा को रुपया दे के) लो बिलफ़ेल इतना लो, आगे जैसा काम दिखलाओगे वैसा पाओगे।

घसीटा। हम को कौन बात है? हमारा यह मथफोड़ा (लाठी को दिखला के) अच्छो तरे रहे, तो आपके अकबाल से बहुत कुछ कमा लेंगे।

शम०। अच्छा, अच्छा, अब जाओ। शायद कोई नौकर आकर इधर आ जाय।

[घसीटा गया।

(ख़ुश हो कर) ख़ैर जो हो सो हो, लौंडे का रुपया अब तो

अपने हाथ रही गया। अरे, वह कर क्या सकता है हमारा। हूं: । अब चलें ज़रा कुछ नाश्ता कर लें। दो दिन से जैसा कुछ खा रहा हूं, कह सकता हूं कि गोया फ़ाक़ा ही खींच रहा हूं।—आज एक बार ज़रा नाज़िनी के महल में भी चलना चाहिये। हलीमा में अब वह कैफ़ियत नहीं रही। हमेशा एक ही को क्या कोई प्यार कर सकता है? ख़ुदा ने आदमी के दिल को ऐसा ही बनाया है, कि इसे हर वक़्त नई नई चीज़ चाहिये। (सोचता हुआ टहल रहा है।) मगर यह आंच बुझती क्यों नहीं? या अल्लाह यह क्या बात है, ऐश औ इशरत का सारा सरंजाम हमारे हाथ में रहते भी मुझे ख़ुशी क्यों नहीं होती? याने जब कोर्ट आफ़ वार्ड्स से छुट्टी भी न हुई थी तब ही से तो हर फ़न में ताक़ हूं। तब ही से तो बराबर गोया बहरे अइयाशी में ग़र्क़ हूं, मगर तब भी यह बला की प्यास क्यों नहीं बुझती! ख़ैर यह तो यह, और कभी कभी तबियत इस तरह बेतोर घबराती क्यों है! गोया कुछ भी नहीं सुहाता,—अ:! बहुत सोचना भी बुरा है। खाओ पीओ चैन करो। अफ़ियुनियों की तरह बैठे बैठे सोचा करना बहुत मनहूस है। (शराब पीता है, और ऊपर से गोश्त खाता है।) इस की यही दवा है। साक़ी और माशूक़ा तक्लीफ़ तो देती हैं, पर आराम भी वैसे ही देती हैं।—दुनिया भी एक जंजाल ही है, आंख बन्द कर लो तो फिर कुछ भी नहीं, सिर्फ़ वही एक अल्लाहताला परवरदिगार है। अब नये नये कई एक लौंडे अंगरेज़ी पढ़ पढ़ के कहते क्या हैं कि मुल्क की भलाई करो। अजी हमारे मुल्क की भलाई बाल, मरोगे तो क्या मुल्क साथ लेते जाओगे? भाई हमारे ज़िन्दगी का कुछ भी ठिकाना नहीं, यह तो पानी का बुलबुला है,

अभी है अभी नहीं। जब तक बचे हो मौज करो, खूब खाओ पीओ, मज़े उड़ाओ, लो, दो, उड़ाओ पुड़ाओ, कौन जानता है कल क्या होगा? हम कुछ नहीं मानता है। "आराम से गुज़रती है आक़बत की खुदा जानें।"——मगर फ़िलहक़ीक़त क्या हमें चैन है? उंहूं।—यह फिर वही बात, सोचने ही के पीछे एक दिन न एक दिन हमारी जान भी जायगी। गिलास हाथ में लो देखो अभी चैन आता है। भ'ई चाहे इसे हराम कहो चाहे हलाल, मगर इस से बढ़ कर असरदार दूसरी दवा नहीं।

[दो पतुरियों का प्रवेश।]

अहा ये ले अब के मेंह कहां से आये?

दोनों पतुरियां। आप भूल गये तो क्या हम लोग भी आप को भूल जायेंगी?

(नाचना और गाना।)

गीत।

पीलु खेमटा।

सलोनी तेरी सुरत मे रे जिय भाई।
तन में मन में नैनन में छबि तेरी रही समाई।
इन आंखिन की ओर रुचत नहीं करो अनेक उपाई
हरी चंद तु हीएक सर्वस जीवन धन सुख दाई।

शमशेर। क्यों न हो, वाह वा, क्या बात है? चलो कमरे में चलें, यहां यह गाना जमता नहीं।

[सब गये।

चौथी झांकी।

बिहार खानकाह, शमशेर बहादुर का महल।

[अब्बास और नसीमन के प्रवेश।]

अब्बास। अम्मा, मैं तुम से रुख़सत होने आया हूं।

नसीमन। (धीमी आवाज़ से) बेटा, तो क्या तुम सचमुच जाते हो? कब जाओगे बेटा?

अब्बा०। अम्मा अभी तुरत।

नसी०। अभी तुरत, जाओगे बेटा?

अब्बा०। हां अम्मा।

नसी०। (आंख से आंसू पोछ कर) बेटा, तू कैसे मुझे छोड़ जायगा! तुझ सिवा मुझे अम्मा कह के पुकारने वाला और कोई नहीं है, बेटा!

अब्बा०। (आंख में आंसू भर कर) अम्मा दो एक बरस के बाद फिर तुम से आके मिलूंगा।

नसी०। (रोवासी अवाज़ से) तब तक मैं बचूं तब न? हमारे "अम्मा" कह के पुकारे जाने का शायद यही आख़री दिन है। मुझे (रो कर) अपना लड़का कोई नहीं हुआ, बेटा अब्बास तू मुझे अम्मा कह के पुकारता था, इस से मैं अपना वह दुख भूली हुई थी। तुझ को मैं ठीक अपने फ़र्ज़न्द के बराबर जानती थी। बेटा, वह हमारी बुझी हुई आग आज फिर भड़क उठी। बेटा अब अम्मा कह के पुकारता पुकारता कौन हमारे नज़दीक आवेगा? हाय, इस दुनिया में मुझे अम्मा कह के पुकारने वाला कोई न रहा! बेटा अब्बास, तुझे क्या इसी लिये पोसा पाला है कि जब तू जवान हो

तो मुझे छोड़ के चला जा? नहीं, इस में तेरा कुसूर क्या है, मेरी किस्मत ही ऐसी है!

अब्बा०। अम्मा, तुम क्यों इतना अफ़सोस करती हो? मैं तुम्हारा पांव छू कर क़सम खाता हूं, मैं फिर तुम से आ के मिलूंगा, ज़रूर मिलूंगा। अब दुआ दो, मैं रुख़सत होता हूं।

नसी०। ज़रा ठैर जाओ, मैं आती हूं।

[गई।

(हलीमा का प्रवेश।)

हलीमा। (डरती हुई) अब्बास जाते वक़्त ज़रा मुझ से भी मुलाक़ात करते जाना। देखो, तुम्हें क़सम ख़ुदा की, ज़रूर ज़रूर आना।

अब्बास। (शरमा के) आप के नज़दीक जाते—

हलीमा। शर्म मालूम होती है। (आंख पोछ के) मुझ ना-पाक से सब ही नफ़रत करते हैं। (अब्बास का हाथ थांभ के) बेटा, एक बार ज़रूर हमारे पास आना। मैं तुम्हारी ही भलाई के वास्ते कहती हूं।

अब्बास। (तअज्जुब से) हमारी भलाई के वास्ते!

हलीमा। हां बेटा, तुम्हारी ही भलाई के वास्ते। एक शख़्स तुम्हारी जान के पीछे पड़ा है।

अब०। (डर से) एं, क्या?

हलीमा। बेटा इस का बड़ा क़िस्सा है। (डर डर के) यहां मैं नहीं कह सकती। उसे अगर मालूम होगा तो वह तुम्हारी जान तो लेहीगा, मुझे भी जीता न छोड़ेगा।

अब्ब०। कौन वह?

हल०। ज़रा और आहिस्ते बोलो। क्या जाने कोई दुश्मन लगा हो, तो हक़ नाहक़ हमारी तुम्हारी जान जायगी। ज़रा वहीं आ जाना, सारा क़िस्सा सुन लेना। शराब के नशे में मुझ से सब हाल कह डाला है।

अब्। अ—च्छा, आ—ऊं—गा।

[हलीमा गई।

अब्०। अल्लाह, सब के सामने अपना मुंह क्यों कर दिखा सकती है? मियां शमशेर बहादुर इन के देवर हैं, लाहौलवलाक़ूवत उन्हीं से—। जाऊं या नहीं? नहीं जब वाइदा कर चुका हूं, तो जाना ज़रूर है।—डर भी मालूम होता है। मगर हमारा तो कोई दुश्मन नहीं है। हमारी बुराई कौन करेगा? और मुझ ग़रीब की बुराई करने से उसे नफ़ा क्या? "बगुला मारे पंख हाथ।"

(नसीमन का प्रवेश।)

नसी०। बेटा, इन रुपयों को राह ख़र्च के वास्ते अपने साथ लेते जाओ। (लंबी सांस फेंक कर आप ही आप) बेटा, ये तुम्हारे ही रुपये हैं।

अब्बा०। अम्मा, राह ख़र्च के लिये तो हमारे पास रुपये हैं। देखो न, ये क्या हैं। अब तो रुपयों की कुछ ज़रूरत नहीं। तुम अपने पास इन्हें रहने दो।

नसी०। बेटा, और किसी काम में ये आवेंगे। रख लो, ज़िद न करो, मेरी बात सुन लो बेटा।

अब्बा०। अम्मा, तुम इस तरह क्यों बोलती हो? जब से मैं ने अपना होश संभाला है तुम ही को अपनी मा समझता हूं। तुम्हारा कहना न कभी उठाया है, और न उठाऊंगा। देखो, इन रुपयों को ले लेता हूं।

नसी०। बेटा तेरे लिये हमारी मुहब्बत और भी बढ़ी जाती है। अब कौन मुझ से इस तरह बात चीत करेगा? (रोना)

सज्जा०। अम्मा, अब सब्र कर के बैठो। देखो देर हुई जाती है, मुझे दुआ दो, कि मैं रुख़सत होऊं।

नसी०। तुम्हें और क्या दुआ दूं, बेटा, यही दुआ देती हूं. कि या परवरदिगार! इस बच्चे पर कोई बला न आने पावे, आवे भी तो फ़ौरन टल जाय!

सज्जा०। अम्मा, मुझे न मालूम क्यों ख़ौफ़ मालूम हो रहा था कि इस मकान से निकलते ही मुझ पर कोई आफ़त आयगी। लेकिन अब कुछ परवा नहीं, आप की दुआ बे असर नहीं होने की। ख़ैर, अब रुख़सत होता हूं। अम्मा! अहा, लफ़्ज़ "अम्मा" भी कैसा प्यारा है? क्या देस में क्या बिदेस में, क्या तकलीफ़ में क्या आराम में, क्या महल-दु-माही में और क्या क़ैदख़ाने में, इस लफ़्ज़ के मुंह से निकलते ही दिल का दर्द आधा हो जाता है। (आंसू पोछ के) ख़ैर तो अब रुख़सत होता हूं।

नसी०। (रोती रोती) चलो बेटा, तुम्हें दरवाज़ तक पहुंचा आऊं। बग़ैर तेरे कैसे जीऊंगी, बेटा? (ज़ोर से रोती है।)

[दोनों गये।

दूसरा अंक।

पहिली झांकी।

एक बड़ी सी बही और एक तोड़ा रुपया लिये काली प्रसाद का प्रवेश।

काली०। (जम्हाई लेकर) अब जीने में तनिको मज़ा नहीं। रात दिन हिसाब किताब, रात दिन हिसाब किताब। (बैठ के) घड़ियो भर भी जे है से जी बहलावे के फ़ुर्सत मिले सेउ नहीं। मियां सज्जाद के तो जे है से सिर्फ़ एक पटना है। न घर बार के फ़िक्र, न गांव गिरांव के फ़िक्र। "फ़लानी जगह कहत है, १०० रुपइया वहां भेज देना," "फलने पर बड़ी मुसीबत है, ५० रुपइया उस को देना," "फलना लड़का बड़ा ग़रीब है, उसे इसकूल का महीना दिया करना," फलने के घर में आग लग गया है, उस का मकान बनवा देना"—बस हुक्म पर हुक्म जे है से चलल आवत करे हई। न जानूं दिन भर में दस गो चिट्ठी आवे हई कि वारह गो कि "क़हत के सबब से गांव में कोई भूख न मरने पावे।" से जइसन मियां सब काम-काज हमरे ऊपर छोड़ देलन है आउर कोई दीवान जे हई से होत तो भगवान् जाने चारे दिन में सौंसे घर चौपट कर लीप पोत के रख देलहोत। हम तो जे हई से बूढ़े मीयां के वक़्त से नौकरी करै हियो जौन दरबार में अते परवस्ती भेलई और जेकर का नाम

की बारह बरस तक नमकवा खैलूं हूआं ऐसन अधरम जे हई से हमरा से न होती। मगर हां, कसम तो न खा सक छियो, भला जहां नौकर छियो हूएं के न खाब तो खइबई कैकर ? बस यही सात रुपइया के महीनवा है और पन्द्रह सोलह गो जें हई से ऊपरसे मिल जाय है। इतनो न लूं तो ई गिहंस्ती कैसे निबहत ? जोरुआ बेटवो के भी तो पेट हई ? उनखनी कहां से खइतन ? औहपर ई जे हई से दू दू बेटियन का धूम से बियाह कहां से कैलियो ? सरकार से तो दूए सो रुपइया मिलल रहल एकरे पीछे तबाह भैलूं की भैलूं ? से रमायन जी में लिखबे करे हई कि भाका के धन चोराबे में जे हई से जरीको पाप न। कैसे जो दोहवा हई——मर ससुर, यादी न भावे हई। भाउर पाप भगर होबो करत तो जे हुई से जेठ बैसाख में पन-सल्लवा बिठलावे छियो, जन्माष्टमी रामनवमी, छठा साल में तीन तीन गो बरत करे छियो, जब पटने जा छियो तब रोज़ गंगा अशनान कर छियो एही सब से पाप कट जात होत। सियाराम, सियाराम, सिया राम। राम तोहरे भरोसा भारी।

एक बुढ़वे का प्रवेश।

बुढ़वा। दीवान जी, मेरा हिसाब देख रक्खा है ?

कालो। आदाब अर्ज़ है, आइये तशरीफ़ लाइये। जनाब अभी फ़ौरन देखैं दे हैं। अरे रामटुइयां—आं—आं।

नेपथ्य से। जी—ई—ई!

काली। अरे, ख़ां साहब तशरीफ़ लैले हथिन, तनिक हुक़वा भर के ले ले आव।

हुक्का ले कर रामटुइया का प्रवेश।

काली। अरे, तनिक हमरी नरियरवा औन्ने से उठौले आव।

[रामदुइयाँ नारियल दे के गया।

काली। सब मुद्दा के रुपइया आप का बाक़ी निकलता है, ख़ाँ साहब ?

बु०। देखो न, यही १ सौ ३४ रुपये और ८ आने।

का०। चिठवा साथ लिये आये हैं ?

बु०। हाँ यही तो है। (जेब से निकाल के चिट्ठा देता है।)

का० (बही से चिट्ठा मिला के) हाँ हिसबवा तो ठीक है। मगर ख़ाँ साहब पूरा १२०) लेना मंज़ूर हो तो अभी निकाल दें, नहीं तो अभी कुछ रोज़ दम लीजिये।

बु०। नहीं दीवानजी, मुझे बड़ी ज़रूरत है, मुझे आज ही चाहिये। ख़ैर, आप १२० ही रुपये दीजिये।

का०। (१२०) दे कर) रसिदवा पर ज़रा दसकत कर न दीजिये।

बु०। (दस्तख़त करके रुपया परख परख के गिनते गिनते।) अच्छा दीवान जी, मियाँ सज्जाद ब्याह करेंगे या नहीं ? बरस २५, २६ एक के तो हुए होंगे। ख़ुदा के दिये से किसी बात की कमी नहीं है। जवान जैसा ख़ूबसूरत, वैसा ही अमीर भी है। बहन भी तो १५, १६ एक की हुई होगी। भला ख़ुद ब्याह न करें तो चन्दां मुज़ायक़ा नहीं, मगर बहन को क्यों नाहक़ कुंआरी रक्खे हुए हैं ? और बिरादरी की शर्म नहीं है ? सिन ज़ियादः हो जाने पर फिर बेचारी से ब्याह कौन करेगा ? आप लोग नहीं कुछ कहते ?

का०। ब्याह का होना भी कुछ मुशकिल है ? एक तो घर के अमीर, दूसरे लड़की भी भाई ही सी सुनते हैं देखने में मुंह कान की बहुत ही अच्छी है।

बु॰ । फ़र्ज़ कर्दम कि सब कुछ है, मगर ताहम शादी तो जल्दी ही न कर देनी चाहिये ? आप नहीं अपनी सलाह देते ?

का॰ । हम सब क्या कहने को चूकते हैं, जनाब ? मगर उन्हें तो शादी के नाम से बुख़ार आता है—क्या अपनी, क्या बहन की। एक लड़की जो और है उस का भी ब्याह नहीं कर देते, वह भी १०, १८ बरस की होगी।

बु॰ । क्यों साहब तो क्या इन लड़कियों का भी ब्याह करने पर जी नहीं चलता ?

का॰ । साहब, चलता भी होगा, तो क्या वह कहेंगी कि साहब हमारा ब्याह कर दो ? ब्याह का ज़िक्र न मियां सज्जाद करते हैं, और न वह करती हैं। जनाब, कह तो दिया कि यह क़िस्मत वह चीज़ है कि क्या अमीर और क्या ग़रीब सब के साथ है। अब इसी बात को देखिये कि इन लोगों को नारायण की कृपा से किस बात की कमी है ? अभी चाहें तो सैंकड़ों ब्याह कर लें, एक से एक ख़ूबसूरत और अक़लमंद जोरू मिल सकती हैं, मगर करम में तो दोनों भाई बहन के बदा है कुंआरे रहना, फिर ब्याह हो तो कैसे हो ?

बु॰ । (इशारा कर के) कुछ वह सब बातें तो नहीं हैं ?

का॰ । जी नहीं, मुत्लक़ नहीं । उस से तो कुछ वास्ता ही नहीं। मुझको इस दरबार में रहते आज एक लख़ १२ बरस हो गया, मगर उस बात को न कभी देखा, और न सुना। उस बात की तरफ़ से तो दोनों लड़कियों को बड़ा ही परहेज़ है। मगर है क्या कि किसी सरपरस्त के नहीं रहने से—

बु॰ । हां, हां, क्या क्या ?

का०। और कुछ नहीं सिर्फ़ इतना ही कि लाज शर्म बहुत कम है। जिस से तिस से बात चीत करना, सिर खुला रखना, समझा कि नहीं यह सब औरतों के लिखने पढ़ने का नतीजा है उस पर भी कोई घर में बड़ा बूढ़ा डांट डपट करनेवाला नहीं जैसा जी में आता है वैसा करती हैं। मगर ख़ां साहब, मिज़ाज की दोनों ऐसी लायक़ और ख़लीक़ हैं, कि मैं आप से क्या बयान करूं ? याने जब हमारा छोटका बेटा बीमार पड़ा था तो दोनों रोज़ बेनागे, उसे देखने को मुझ ग़रीब के यहां जातीं, अपने हाथ से दवा पिलातीं, और अपनी गोद में ले कर पहरों टहलतीं, जब लड़के को नींद आ जाती तब घर लौट आतीं। ख़ां साहब, मैं तो अपने लड़के की ज़िन्दगी से हाथ धो चुका था। पर वह, सच पूछिये तो, इन ही दोनों की मदद से जीया! ख़ैर, यह परसों का ज़िक्र है कि ज्यों हो दोनों खाने को बैठा चाहती हैं कि मामा ने आ के ख़बर की कि "२५, ३० कंगले मय औरत और लड़के बाले ५, ४ रोज़ा के भूखे दरवाज़े पर आ खड़े हुए हैं, उन्हें कुछ दिलवाओगी? जो हुक्म हो सो दीवान जी से दिलवा दें।" दोनों ने खिड़की से जो झांकके देखा तो हक़ीक़त में उन्हें भूख से क़रीब-उल-मर्ग पाया। और मामा से झिड़क के बोलीं कि "अरी, [illegible]मबख़्त दीवान जी से क्या दिलवाने चली है, रुपये ले कर वह भूखे [illegible]ा चबायेंगे? चल, चल चूल्हे पर हंडिया चढ़ा दे, देखती [illegible]ा है।" ग़रज़ खाना पकवाके सब कंगलों को भर पेट खिलवा [illegible]या तब आप खाने बैठीं। यह सब माजरा मुझ से मामा ने [illegible]ा के कहा।

बु०। यह तो अल्बत्ते बहुत ही अच्छी बात है। इस ज़माने

में दिल के ऐसे सखी लड़के वाले, मक्खीचूस अमीरों के यहां शाज़ नादिर पैदा होते हैं। दीवान जी, दोनों पढ़ी लिखी भी हैं?

का०। जनाब कुछ ऐसा वैसा? फ़ार्सी अंगरेज़ी दोनों, अच्छी साहबें, दोनों कितावें तसनीफ़ करती हैं।

बु०। अच्छा, दोनों का रंग रवाइया कैसा है?

का०। सुनता तो हूं कि अजब क़िस्म का है। ज़ेवर से तो बड़ी ही नफ़रत। बहुत किसी ने कुछ कहा सुना तो दो एक ज़ेवर पहन लेती हैं। नथ, चूड़ी, कड़ा और पाज़ेब को तो देखती तक नहीं। मिंहदी मिस्सी को तो छूतीं तक नहीं।

बु०। ओ, समझा क्रिस्तानी वज़ा।

का०। नहीं साहब, भला क्रिस्तानी वज़ा भी क्यों कर कह सकते हैं? पांचों वक़्त निमाज़ का पढ़ना, रोज़ा रखना, रोज़ दो एक पारा कुरान पढ़ना, यह तो उन का मामूली काम है।

बु०। ऐं, यह बात है?

का०। जी हां, और क्या?

बु०। मगर दीवान जी, यह बात तो अच्छी नहीं कि भले आदमी के घर की लड़कियां, और ज़ेवर न पहनें, मिंहदी मिस्सी न लगायें।

का०। खां साहब, मैं एक बात और आप से कहता हूं, कि जिसे सुन कर आप को और भी तअज्जुब होगा। मगर किसी से कहियेगा मत।

बु०। लाहोलवलाकूवत। दीवान जी खुदा के फ़ज़ल से यह बुरी आदत मुझ में नहीं है कि जो आप से सुना उन से कह आये, और जो उन से सुना सो आप से कहा।

का०। (धीरे से) जनाब, क्या कहूं, कभी कभी दोनों, मेम की तरह घंघरा कुर्ता पहनती हैं— (और धीरे से) और पांवों में मुंडा जूता पहनती हैं।

बु०। (आंख फैला के) ऐं—एं—एं, क्या आप कहते हैं, दीवान जी? घंघरा, कुर्ता और मुंडा जूता?

का०। ख़ैर इस ज़िक्र ही को जाने दीजिये। हम लोगों को इस से कौन काम? बड़े घर की बड़ी बातें।

बु०। दीवान जी, मैं तो इस बात को सुन कर हैरान हो गया हमारी इतनी बड़ी उम्र हुई, मगर मैं ने ऐसी बात कभी नहीं सुनी थी। घंघरा—कुर्ता—मुंडा जूता—माज़ अल्लाह मिनहा। ऐं साहब मियां सज्जाद ख़ुद कैसे हैं?

का०। "राम मिलाई जोड़ी,
कोऊ अंधा कोऊ कोड़ी।"

ख़ुद भी वैसे ही हैं।—पतलून—कोट—बूट। मगर और सब बातों में तो बहुत ही अच्छे हैं। लेना देना, रफ़्तार, गुफ़्तार निशिस्त बरख़ास्त सब कुछ जैसा चाहिये वैसा है। एक ऐब है तो यही है कि गुस्सा हद से ज़ियादे है। गुस्सा चढ़ा तो फिर होश ठिकाने नहीं रहता। और गुस्सा उतरा तो फिर मुलायम भी वैसे ही मगर कुछ कुछ अभी तक लड़कपन भी है। मगर देखिये किसी से कहिये उहियेगा मत।

बु०। लाहौलवलाकूवत, कह तो दिया कि यह आदत मुझमें नहीं है। (उठ कर) कहो दीवान जी, मीर साहब के यहां आज मुजरा है, चलोगे?

का०। जनाब, हमारी जान को छुट्टी कहां जो मुजरा देखूं? ख़ैर

घंटा आध एक के लिये छुट्टी मिल गई तो आ जाऊंगा। हमारे मियां सज्जाद को नाच मुजरे से बड़ी चिड़ है।

बु०। ऐं, क्या कहते हो? यह नई जवानी और नाच मुजरे से चड़? जब हम सब जवान थे तब घड़ी भर तो बगैर नाच मुजरे के चैन ही न था। और अब भी क्या हुआ है, दिल बूढ़ा थोड़ा ही हुआ है? हा, (गा कर) "तेरे नयनों ने जादू—।"

का०। (तुरत उठ के बुढ़वे के मुंह पर हाथ रख के) ख़ां साहब, यह आप क्या करते हैं, दोनों लड़कियां ऊपर ही हैं, सुनेंगी तो जुल्म हो जायेगा।

बु०। (गुस्से से) घंघरा, कुर्ता, और मुंडे जूते के पहिनने में कुछ गुनाह नहीं, मगर एक गीत के गाने में जुल्म हो जायगा? बिसवीं सदी में ऐसी ऐसी बातें तो होहींगी।—ख़ैर तो मैं अब रुख़सत होताहूं।

का०। चलिये न हम भी साथ ही चलते हैं। हुक्का एकाद चिलिम और नहीं पी लीजियेगा?

बु०। जी, अब नहीं।

[दोनों गये।

दूसरी झांकी।

बिहार, अमेर, सज्जाद का जनाना मकान।

सुम्बुल और गुलशन बैठी हैं।

गुलशन। आपा, "बंबई के पार्सियों की उन्सियत और य-

ख़लाक़" नाम एक किताब जो हाल में छपी है, तुम ने देखी है ?

सुम्० । नहीं । कैसी है ?

गुल्० । अच्छी किताब बनी है ।—पार्सियों में ग़रीब दुखियों को परवरिश का अच्छा क़ायदा है । हां आपा, देखो, लफ्ज़ ग़रीब दुखिये पर तुम्हारी बात याद आ गई ।—तुम्हें शहर के हिन्दू मुसल्मान दोनों दुआ देते हैं । हिन्दुओं ने तुम्हारा क्या नाम रक्खा है जानती हो ?—अन्नपूर्णा ।

सुम्बु० । (मुस्कुराके) सुब्हान अल्लाह, अच्छी बात से अच्छी बात याद आ गई । भला मैं तो अन्नपुर्णा हूं और तुम क्या हो ?

गु० । (सुम्बुल के बदन से लपट के) मैं और क्या हूंगी ? जो हूं सो हूं । सिर्फ़ गुलशन, तुम्हारी छोटी बहन ।

सुम्बु० । गुलशन, अब तुम्हारी लड़की कैसी है ?

गुल० । हमारी लड़की !

सुम्बु० । वही, चम्पा की छोकड़ी, जो तुम्हें अम्मा अम्मा कहके पुकारती है, और सिवा तुम्हारे और किसी के हाथ से दवा नहीं पीती ।

गुल० । आज कुछ अच्छी है । कल से बुख़ार नहीं आया है ।

सुम० । गुलशन इधर बहुत दिनों से तुम्हारे भइया की कोई चिट्ठी नहीं आई है, इस से जी बहुत घबड़ाता है ।

गुल० । आपा, भइया क्या सिर्फ़ हमारे ही है, तुम्हारे क्या कोई नहीं ?

सुम्बुल । (लांबी सांस फेक के) हमारे वह कौन गुलशन ? मुझ पर ज़रा मिहरबानी की नज़र रखते हैं, बस इसी क़दर न ?

गुल० । ज़रा क्यों, भइया तो मुझ से भी ज़ियादे तुम्हें चाहते हैं ।

सुम् ०। (आंख में आंसू भरके) गुलशन्, तुम तो उन की सगी बहन हो, और मैं कौन हूं तीन में कि तेरह में ? मुझ यतीम पर रहम खा के उन्हों ने अपने मकान में पनाह दी है, इतना कहां का थोड़ा है ?

गुल०। आपा, तुम्हारा किसी बात पर मुंह नहीं उठता। ठैरो, भइया को आने दो, मैं उन से सब हाल कह दूंगी।

सुम ०। नहीं, बहन, वल्लाह तुम हमें खाओ जो उन से कुछ कहो तो। वह सुनेंगे तो बड़े रंज होंगे।

(एक चिट्ठी लिये दाई का प्रवेश।)

दाई। ए बीबी, ए बीबी, दिवान जी ई खत भेज दिहिन हैं। कहिन हैं कि पटने से आया है।

[गुलशन के हाथ में चिट्ठी दे के दाई गई।

गुल ०। (सुम्बुल के हाथ में चिट्ठी देके) लो, चिट्ठी चिट्ठी कर उस वक्त से घबड़ा रही थी, अब लो चिट्ठी अपनी।

(दोनों मिल के उस चिट्ठी को धीरे धीरे पढ़ती हैं।)

गुल० (हंस के) हम लोग बंदर की औलाद हैं या नहीं, माज़ अल्लाह, ऐसी बातों की बहस भी अनजुमन में हुआ करती है—

सुम०। (मुस्कुराके) पीछे हंसना, पहिले चिट्ठी तो सारी पढ़ लो।

(फिर दोनों मिलके चिट्ठी पढ़ती हैं)

गुल०। (गाल फुला के) हूं, भइया ने मुझे ख़ब्ती लिखा है। अच्छा भइया आवेंगे, तब मैं कभी जो उन से बोलूं ? मैं ख़ब्ती हूं क्यों ?

सुम्बु०। (हंस के और गुलशन के गाल को दाबके) गुलशन, तुम हक़ीक़त में खल्ती हो, अज़ी यह प्यार से लिखा है या हक़ीक़त में लिखा है?

गुल०। वाह, तुम को भी तो वह प्यार करते हैं, फिर तुम्हें क्यों नहीं उन्हों ने खल्ती लिखा? हुं-उ-उ-उ।

(दाई का पुनः प्रवेश।)

दाई। हि: हि: हि: ए बीबी,—हि: हि: हि:।

सुम०। क्या मामा, क्या? इतनी हंसती क्यों हो?

गुल०। अरी कमबख्त जल्दी बता भी सही, माजरा क्या है?

दाई। हि: हि: हि: छोटी बीबी की ब्याह की बात आई है? हि: हि: हि:।

गुल०। ज़रा शक्ल तो देखो।

सुम०। (हंसके) कहां से और किन से?

दाई। खनकाह के मियां समसेर बहादुर से। उन का एक ब्याह तो हो चुका है। हि: हि: हि:।

सुम्बु०। कौन निस्बत लाया है?

दाई। हि: हि: बीबी हंसते हंसते तो पेट तुम्बा हुआ जाता है। एक बुढ़िया लाइस है। हम उस को इधरै लिये आवे हैं।

(करिमनी बुढ़िया को लिये दाई का पुनः प्रवेश।)

सुम्बु०। निस्बत किस से लाई हो; बुढ़िया?

करिमनी। खनकाह के नामी जमीदार मियां समसेर बहादुर से। बड़े अमीर आदमी हैं।

सुम्बु०। उन की पहली बीबी तो अभी है न?

करिमनी। है तो हरज का है? (गुलशन की तरफ़ उंगली

दिखाके) मियां इन ही के अख़तियार में रहेंगे। ऐसी ख़ूबसूरत नौजवान बीवी को छोड़के उस अधबैसू को वह प्यार करेंगे ?

(सुम्बुल और गुलशन ने शरमा के मुंह नीचा कर लिया ।)

दाई। छि: छि: छि: । क्यों जी तुम्हारे मियां की उमिर क्या होगी ? और देखने में बड़े खसवूरत हैं क्यों छि: छि: छि: ।

करिमनी । मरौं छियां की माया कैसी ? दूर हो निगोरी इतनी हंसी ? अरे उमिर जरा बेसी है और जरा सांवले हैं तो उस से क्या ? जो काह के बराबर खज़ाना है, एक दफे हूं करें तो सौ सौ गंडा लड़की आप ही आ के खड़ी हो जांय ।

सुम्बु० । (गुलशन को दहने हाथ से पकड़ के) बुढ़िया, तू अपने मियां से जा के कह दे कि उन के ऐसे ऐसे सैंकड़ों शमशेर बहादुर के सैंकड़ों काह के ख़ज़ाने हमारी गुलशन के पावों के एक नाख़ून के बराबर भी नहीं होंगे ।

करिमनी । तुम उन की को होती हो, बेटी ?

सुम० । (ज़ोर से) हमारी यह छोटी बहन हैं ।

करिम० । खाली बहन इसी में इतनी लाली, भाई होता तो न मालूम क्या कर डालतो ?

दाई । जू होते तो तेरे गले में हाथ देके बाहर निकलवा देते ।

करिम० । (उठके गुस्से से) मेरी ऐसी बेइज्जती, अच्छा हम तो अभी जा हैं चले । बाकी इस घर का अच्छा नहीं होगा । मीयां समसेर बहादुर कुछ ऐसे वैसे नहीं हैं । दस बारह दिन में सब तमासा न दिखा दें, तो हम को भी एक मा बाप की जनी मत कहियो ।

[पांवों पटकती गई ।

दाई। क्यों री बुढ़िया हरामज़ादिन कहीं की? काहे रे ढंगरा बिलौनी, तेरा इतना बड़ा मगदूर हुआ कि तें हमरे सामने हमरी बीबी सब को थकोसे? खड़ी तो रह पियरवा बिलौनी, तो को झाड़ू झाँटों।

[दाइ गई।

सुम्बु०। (मुस्कुराके) क्यों गुलशन शमशेर बहादुर से शादी करोगी?

गुल०। क्यों तुम ही क्यों नहीं कर लेती।

सुम०। खैर वह पसंद नहीं है, तो चलो दूसरा मियां ढूंढ़ लो दूं। चलो, इस बात के लिये इतना अफ़सोस क्या।

गुल०। आपा, मैं तुम्हारी बलायें लूं जो तुम्हें मैं खूब चाहती न होती तो तुम से मैं इस वक़्त खूब लड़ती। मगर आपा, मुझे बड़ा डर मालूम हो रहा है, वह बुढ़िया तो बेतरह धमका गई है।

सुम०। गुलशन, इस तरह डरा करोगी तो जगह चाहिये। उस वक़्त वह चुड़ैल और कर क्या सकती थी? बेचारी धमकाने से भी गई?

[दोनों गईं।

तीसरी झांकी।

पटना, एक सदर सड़क।

एक दरख़्त के नीचे एक बंगाली सर्वेयर हुक्का, पी रहे हैं, और एक पटनियां उन के पास बैठा है।

बंग०। आरे बावा, शोव भाग्गीर कौथा।
"ज़ार कोपाले नाई की घी, ठोक ठोकाले तार होबे की ?"

(अब्बास का प्रवेश।)

अब्ब०। खैर अब कुछ परवा नहीं। इन्हीं बाबू से राह पूछ लूं। क्यों बाबू पटने जाने को राह यही है न ?

बंग०। (अब्बास की तरफ़ देख के) काहे जी ?

अब०। मैं बिहार से आता हूं।—पटने, नौकरी की तालाश में।

बंग०। (ज़रा सोच के) हूं। आप का पाश कुछ रुपइया हाय ?

अब०। क्यों ?

बंग०। (पटनिये की तरफ़ इशारा करके) अब पाटना जाने का हुकूम नाई है। लेकिन जो जो मानुष दोठो करके रुपइया दे शेकता है, उशी को जाने का एकतियार हाय। कोम्पानी बाहादुर का होकोम हम क्या करें ?

अब्ब०। सरकार इन रुपयों को लेके क्या करेंगी ?

बंग०। आरे भाई, वोही तो बड़ा मौज़ा का बात हाय। कोम्पानी बाहादुर वोही रुपइया में बांदोर का नाच देगा।

अब्ब०। (तअज्जुब हो के) सरकार बंदर का नाच करायेगी।

बंग० । हां जी, हाम क्या भार मिथ्या कोथा बोलता है ।

अब० । ख़ैर, किस तरह बंदर का नाच होगा ।

बंग० । शूनो जी शूनो । लेन का मायदान में बोड़े बोड़े बांश गाड़ते हैं ।

अब० । उस पर क्या होगा ?

बंग० । भोश का ऊपर बांदोर का नाच होगा ।

अब० । बांस के ऊपर बंदर का नाच । ये बंदर कहां के हैं और नचाबेगा कौन ?—माज़ अल्लाह, बांस के ऊपर बंदर का नाच !

बंग० । हा: हा: हा: ! बड़ा मौजा का बात है । मीयां शाहेब जी, बड़ा मौजा का बात ! ऊ जो शाहर का बोड़ा बोड़ा भादमी है, भोही लोग को बांस का ऊपर नाचना होगा । भार भोही लोग को शब को एकठी एकठी कर के दूम बनाये देगा । भार हार एक दूम में एक एकठी रोश्शी बांध देगा । भार जब शब रहीश लोग बांश का ऊपर ऊठ के नाचेगा, तब नीचू से रोश्शी खींचेगा, भार इधिर उधिर घुमावेगा ।

अब० । रईसों को बांस के ऊपर चढ़ के नाचना पड़ेगा । ख़ैर नचावेगा कौन ?

बंग० । बड़ा बड़ा शाहेब लोग डुम्बरी बजावेगा, भोर जेशा जेशा कोरने होगा नीचू शे चिल्लाय के कहेगा । भार ऊ जो बाड़ा शाहेब है एक हात में रोश्शी पकड़ेगा भार दोशरा हाथ में चाबुक लेगा ।

अब० । (चौंक के) रईसों को क्या चाबुक मारेंगे ?

बंग० । नहीं जी नहीं, शूनो । ऊ मारेगा नहीं चाबुक शे भावाज़ कोर के ऊ लोग को खाली डरावेगा । जेशा बांदोर का

नाच में कोरता है। आवाज़ शुनने शे रहीश लोग भाला तारह शे नाचेगा।

अब०। क्या सब रईसों को नाचना पड़ेगा ?

बंग०। ना ना, शब को नेई। जो शाहेब का बात में हाय, आर जो आइयाशी कोरता है आर उन का खूसामद कोरता रहता है, ओही लोग शाहेब लोग का एकतियार में हाय, जो चाहे शो इन शे करावे।

अब०। आप को यह किसने कहा ?

बंग०। हाम इश माफ़िक बात आखबार में देखा है।

पटनियां। (एक तरफ़) सचमुच बाबू ?

बंग०। (एक तरफ़) हां, शब शत्य हाय, खाली रुपइया का बात झूठा है। दो रुपइया में शे तीम को एक-ठो देगा।

पटनियां। ए बाबू, मियाँ साहब देहात से आये हैं, उन को पटने का हाल कुछ मालूम नहीं है। नाच कैसा होगा, ज़रा देखला तो दीजिये।

बंग०। आच्छा देखता है। (खड़े होके दुपट्टे को कमर में दुम की तरह बांध के) आप एईठो हमारा दुम का माफ़िक पाकड़िये। (अब्बास शरमाता है।) आप को डर क्या है, आप पाकड़िये। (अब्बास का वैसा करना) होयां तो बांश हाय नाई, हाम राश्ता का ऊपर नाचेगा, लेकेन बांश होने शे आच्छा होता (पटनियें की तरफ़) आरे तोम एक ठो चाबुक आर एक ठो बाज़ा आनने पारेगा ?

पटनियां। हां उस अस्तबल में देखें, कोई आदमी होगा तो देगा।

गया, और एक चाबुक, और खंजड़ी ले के आया।

पटनियां। अड़े, मिला बाबू।

बंग०। आप हामारा दुम ठीक ठीक राखिये। हाम तो आबी रहीश हूआ। लेकिन दुम में चोट लागने शे रहीश लोग बड़ा खापा होता है। (पटनियों से) तोम भाई, इधर ओधर आंख राखो, एन्जिन्यर शाहेब ओहेब कोई आवे तो हाम को जलदी बोलो।

पटनियां। बाबू कुछ पड़वाह नहीं, मेंड़ा नजड़ चाड़ो तड़फ़ है।

बंग०। ("धूआं के गाड़ी आदि" गाता है, और नाचता है।) आरे बड़ा भाला नाच होता हाय—रहीश लोग का नाच बड़ा मजेदार नाच—बख़शीश दीजिये अब मीया शाब।—बड़ा भाला नाच—

पटनियां। (डर के) बाबू एन्जिनियड़ साहेब चले आमे हैं।

[सब गये।

चौथी झांकी।

पटना, सदर सड़क।

बसीटा का प्रवेश।

बसीटा। लौंडा गया किधर? देखता हूं, शिकार हाथ से निकला चाहता है। आं? (नेपथ्य की तरफ़ देख के और खुश हो के) यही तो।

नेपथ्य से। और कितना फिरूं ?—इस मकान में भी ज़रा पुकार के देख लूं।—मकान पर कोई है जी ?

घसीटा। कौन है, तुम ? क्या है, चिल्ला क्यों रहे हो ?

नेपथ्य से। किसी अशराफ़ की शक्ल देखता हूं। अः अब जाके जान में जान आई।

अब्बास का प्रवेश।

अब्बा०। जनाब, मैं एक परदेसी मुसाफ़िर हूं। इधर कहीं मकान किराये में मिल सके तो ज़रा मिहरबानी कर के बता दीजिये।

घसीटा। भई, तुम तो बड़े बनबकूल मालूम होते हो। यह बारह कोस का पटना शहर, जहां, ख़र्च करने से, मसल मशहूर है कि बाघिन का दूध मिल सकता है, तोबाह तुम्हें एक ठो मकान न मिला ?

अब्बा०। (गिड़गिड़ा के) जनाब मैं शुरू शुरू यहां आया हूं, मुझे यहां का हाल मुतलक़ नहीं मालूम।

घसी०। ख़ैर, हमारे साथ आओ, मैं तुम्हें अपने मकान में जगह दूंगा। वही सामने वाला हमारा मकान है। अब कुछ फ़िक्र नहीं, जे रोज़ तक चाहो, हमारे मकान में रहना।

अब्बा०। जनाब, आप की इस मिहरबानी से मैं आप का कितना मम्नून इहसान हुआ कि मैं अर्ज़ नहीं कर सकता।

घसी०। ख़ैर, तो अब आओ। (आप ही आप) तुम्हें मम्नून इहसान हो करने को तो लिये जाता हूं। (ज़रा आगे बढ़ के) ए मामू, किधर गये ? ए मामू—ऊ—ऊ।

पीरू का प्रवेश।

पीरू। कहो चचा, सब खैरियत है न? आओ ज़रा मिल तो लो। (दोनों का मिलना) साथ कौन है?

घसी०। (पीरू के कान में कहना।)

पीरू। तब तो फिर पौ बारह। (खुशी से उछलना।)

अब्बा०। (तअज्जुब हो के) यह क्या?

घसीटा। उस की कमर में गेठिये की बीमारी है। इसी वजह से हकीम ने बतलाया है कि "तुम घंटे दो दो घंटे के बाद उछला करो, तो तुम्हारी बीमारी बहुत जल्द छूट जायेगी।" इसी सबब से वह अभी उछला था।

अब्बा०। (ज़रा मुसकुरा के गौर करता है)

पीरू। तुम सोच क्या रहे हो जी?

अब्बा०। जी—कुछ—तो—नहीं।—सिर्फ़ यही सोच रहा हूं—कि आप लोगों—में यह मामू—चचा का रिश्ता कैसे हुआ?

घसीटा। (हंस के) अजी हमलोगों में कोई रिश्ता उश्ता नहीं है। यह प्यार की बोली है।

अब्ब०। एक आदमी मामू कहके पुकारता है, और मामू उसी को चचा कह के पुकारता है, ये प्यार की बोलियां हैं?

घसीटा। हां पटने में ऐसी रिवाज है। यहां तो जो नाम ले के पुकारो, तो लोग खफ़ा हो जायें। यह तो तुम्हारा देहात नहीं है, यहां तो औरों को कौन पूछता है, बहुतेरे तो बाप को भी लाड का नाम रख के पुकारते हैं।

पीरू। तो उस बात को भी कही डालें। अजी इस शहर की बात न पूछो। हीयां तो जोरू खसम का नाम लेके पुकारे है। मसलन मेरा नाम है नबी बकस, तो मेरी जोरू पुकारेगी (बोली

बदल के) "नब्बू, अरे मेरा नब्बू, ज़रा हियां तो आ रे। " इस को उसी बखत जा के हाज़िर होना चाहिये। और जो कहीं ज़रा देरी हुई तो जुलुम हुआ।

अब्ब०। पटने में क्या सब ही औरतें अपने अपने ख़सम का नाम लेके पुकारती हैं ?

पीरू। सब औरत की क्या खसम है कि प्यार के नाम से अपने अपने खसम को पुकारेंगी। सोलह आने में चार आने की खसम ही नदारद हैं, बाकी बारह आने में से आठ आने की खसम रहते भी नहीं हैं। खसम अपना अलगे चैन करते हैं, और उन की जोरू भी—

अब्बा०। बाक़ी चार आने में क्या सब ही ख़समों का नाम लेके पुकारती हैं ?

पीरू। हां, और क्या।

बसी०। मामू, ज़रा वह गीत तो इन को सुनाओ।

पीरू। अरे जाओ चचा, गला आपे सूख रहा है, इन को गीत ही सूझे है।

बसीटा। हो हो इतना जलदी जल्दी ? मामू एत्ता रुपया कहां से आवेगा ? ख़ैर तो चलो मकान चलते जायें। आओ जी आओ।

[सब का प्रस्थान ।

तीसरा अंक।

पहली झांकी।

पटना, सदर सड़क पर कुतुब-फ़रोश की दूकान।

कुतुब-फ़रोश बैठा है, सज्जाद का प्रवेश।

सज्जाद। न मालूम इस की क्या वजह है कि इस मुल्क में लड़के जब तक कि पढ़ते रहते हैं, तब तक तो सब कुछ है, मगर ज्यों ही कौलेज या स्कूल से निकले कि फिर न वह तेज़ी रहती है, न वह हिम्मत और कोशिश रहती है, और न वह हुब्बे वतन रहती है। एक इश्क़ ही ने हमारे मुल्क को सत्यानास कर डाला। देखूं तो सही, इस हैकड़ दुश्मन के दूर करने में मैं कब तक फ़तहयाब होता हूं। [illegible]-अन्जुमन में इस नाम का एक लेक्चर कि "सब बुराइयों की जड़ इश्क़ है पढ़ना है। इस के बयान में जितनी किताबें बन चुकी हैं, सब को देख लेना चाहिये। देखूं तो इस दूकान में कोई किताब अपने गों की मिलती है या नहीं। (कुतुब-फ़रोश को पुकार के) आप की दूकान में इश्क़ के मज़मून की कोई किताब है ?

कु-फ़॰ । जी नहीं, हमारी दूकान में स्कूल ही की प्राय: सब किताबें हैं । "इतिहास तिमिर नाशक" है, "भूगोल हस्तामलक" है, "विद्या की नेव" है, "गणितांक" है, "ज्यामिती" है, "प्राकृतिक भूगोल" है, "विद्यांकुर" है, "भाषा भास्कर" है—

सज्जाद । (हंस के) जी नहीं मुझे इन किताबों की ज़रूरत नहीं । इश्क़ के मज़मून की कोई किताब नहीं है ? ज़रा अच्छी तरह ढूंढिये तो सही । मुझे बड़ी ज़रूरत है ।

कु-फ़॰ । (ज़रा सोच के और ढूंढ के) देखिये तो यह किताब आप की पसन्द है ? इस का नाम "प्रणय परीक्षा है" ।

स॰ । ज़बान संस्कृत में है ?

कु-फ़॰ । जी, नहीं हिन्दी में ।

स॰ । हिन्दी में ? लाइये लाइये । क़ीमत क्या है ?

कु-फ़॰ । जी वाजिब बतलायें या भाव करें ?

स॰ । जी नहीं वाजिब बतलाइये ।

कु-फ़॰ । जी, दो रुपये से कौड़ी कम न लूंगा । जी चाहे लीजिये, जी चाहे न लीजिये ।

स॰ । क्यों साहब किताब में तो एक रुपया लिखा है, आप दो रुपये क्यों कर कहते हैं ?

कु-फ़॰ । जी, यह किताब अब जल्दी मयस्सर होती है ? सारे पटने में बस यही एक किताब है । हमारे पास दो किताबें थीं, एक कल पौने दो रुपये में बिक गई, और एक यह है । इसे दो रुपये से कम में न बेचूंगा । ख़रीदारों की क़िल्लत कुछ थोड़ी ही है ?

स॰ । ख़ैर, मैं दो एक दूकानों में और देख आऊं । (जाना चाहता है ।)

कु-फ़॰। अजी साहिब कुछ आप भी तो कहिये। न भाव किया न बट्टा किया, क्या आये क्या चले? पौने दो दीजियेगा? पौने दो। डेढ़ रुपये दीजियेगा? लाइये एक ही रुपया लाइये। आज भोर को न मालूम किस का मुंह देख के उठा था कि जितने की किताब उतने ही में बेचनी पड़ी, एक पैसा भी नफ़ा न मिला। लाइये दाम लाइये।

स॰। अच्छा देता हूं। (किताब का देखना।)

कु-फ़॰। हां साहिब, बेअदबी मुआफ़ हो तो एक बात पूछूं। आप का ब्याह हुआ है या नहीं?

स॰। (तअज्जुब से) क्यों?

कु-फ़॰। जी नहीं यों ही पूछता था। मैं दस बरस से बराबर इस धंधे को कर रहा हूं, बराबर देखता आया हूं कि इन किताबों को वही ढूंढते हैं कि जिन का ब्याह नहीं हुआ है।

स॰। इस की आप कोई वजह बता सकते हैं?

कु-फ़॰। इस की वजह क्या? इस की यही वजह है कि जब तक कोई चीज़ नहीं मिलती है, तब तक वह बड़ी मीठी और सुहावनी मालूम होती है, और जब मिल गई तो फिर आंख उठा के देखने को भी जी नहीं चाहता।

स॰। (हंस के) ठीक कहा। इश्क़ [redacted] हमारी भी वही राय है। देखिये जिन लोगों ने—

[लोहू से लत पत कपड़े पहने अब्बास का प्रवेश।]

अब्बास। (सज्जाद के पांव पर गिर कर) साहिबो मुझे बचाइयो, मुझे बचाइयो।

स॰। (घबरा के खड़े हो जाना) क्यों क्यों, क्या हुआ? आप कौन हैं?

नेपथ्य से। चोर रे, चोर रे। पकड़ो पकड़ो। वही चोर है रे, वही रे।

अब्बास। (खड़े हो के) साहिब मैं चोर नहीं हूं, मैं चोर नहीं। जिस मकान में मैं था, वहां के दो शख़्सों ने चोरी की थी। चौकीदारों ने आ के उन को गिरिफ़्तार किया। इस माजरे को देख के मैं वहां से चला। पर न मालूम क्या उन के जी में आया कि उन्हों ने मुझे भी पकड़ के मारना शुरू किया। जनाब, देखिये ऐसा मारा है कि तमाम फूट फूट गया है। बड़ी बड़ी मुश्किलों से मैं उन से हाथ छुड़ा के भागा हूं, कमबख़्त मुझे मारने को फिर दौड़े आते हैं, देखिये वह आये। अब मैं आप की पनाह में आया हूं बचाइये, बचाइये, अब दौड़ नहीं सकता। (फिर सज्जाद के पांव पर गिरना।)

स०। (अब्बास को उठा के उस पर शक करता हुआ।) आप चोरों के मकान में जाके रहे थे क्यों? कब से थे?

अ०। जी, थोड़े ही दिन हुए। मुझे यह नहीं मालूम था कि वह चोर हैं।

नेपथ्य से। जी, वही तो है। वही तो है। पकड़े रहना, वह चोर है।

अ०। (डर से) जनाब, मुझे बचाइये। (आंसू पोछना) साहिब, मुझे और कोई नहीं है। खुदा आप का भला करेगा। अगर मेरा क़सूर करना सुबूत हो जाय तो मुझे जो सज़ा मिले सब मन्ज़ूर है। मगर हमारी यही अर्ज़ है कि जुर्म के सुबूत होने के पेशतर मैं नाहक़ मार न खाऊं। देखिये हमारे बदन से खून बह रहा है।

स०। आप अशराफ़ तो मालूम होते हैं। मगर अशराफ़ हो

या न हों, तज्वीज़ के पेशतर यह किसी का मक़दूर नहीं कि आप के बदन पर कोई हाथ रक्खे।

दो कौन्स्टेब्ल, एक अंगरेज़ सब-इन्स्पेक्टर और
बहुत से आदमियों का प्रवेश।

सब के सब। पकड़ो बचा को, पकड़ो बचा को।

(सब-इन्स्पेक्टर का अब्बास को पकड़ के मारने की तय्यारी करना।
सज्जाद का अब्बास को बचाना। कुतुब-फ़रोश
का डर से दूकान बन्द कर लेना, और आड़
से देखना,। और और आदमियों
का इधर उधर दौड़ना।)

स०। ख़बरदार, मारो मत। मारने का तुम्हें कोई इख़्तियार नहीं है। थाने पर ले चलना हो ले चलो।

सब-इन्स्पेक्टर। चोप रो, यू कुत्ता का बच्चा। (सज्जाद के मुंह पर डन्डा चलाना, और फिर अब्बास को मारने की तय्यारी।)

स०। गुस्सा हो के) हैं, यह मुझ पर? (बड़ी फुर्ती के साथ डन्डा छीन कर उसे खूब मार मारना। चौकीदारों का उस की मदद में आना, और मार खा खा के गिरना और भागना।)

सब-इन्स्पेक्टर। (कौन्स्टेब्लों से) काहे [illegible] हराम,सु- अर, किडर भागा टुम लोग? (सज्जाद को मारने की तय्यारी।)

स०। (लात मार कर सब-इन्स्पेक्टर को दूर फेंक के) दग़ाबाज़, हरामज़ादा, सुफ़ेद चमड़े को देख कर हिन्दुस्तानी अब नहीं डरते। (अब्बास से) आप हमारे साथ आयें, कुछ पर्वा नहीं। (अब्बास का हाथ पकड़ के प्रस्थान।)

[सब गये।

दूसरी झांकी।

विहार, खनकाह शमशेर बहादुर का मकान।

शमशेर बहादुर और नसीमन का प्रवेश।

शम०। तू ज़रूर इस बात को जानती होगी। तू ने नहीं कहा है, तो लौंडे को मालूम हुआ क्यों कर? तेरे और मेरे सिवा सारे जहान में इस बात को कोई नहीं जानता है। ज़रूर ज़रूर तू ने उसे कहा होगा। तू ने नहीं कहा तो और कहेगा कौन?

नसी०। खुदा जानता है मैं कुछ नहीं जनती।

शम०। (मुंह चिढ़ा के) "खुदा जानता है मैं कुछ नहीं जानती।" तू ने मुझे बिलकुल उल्लू समझ लिया, क्यों? अब्बास से तू ने ही सब कहा है। सच सच सारा हाल कह दे, इसी में खैर है, नहीं तो वल्लाह सर उतार लूंगा।

नसी०। (रोती रोती) हैं हैं! मेरी बात तुम्हें यकीन नहीं होती? भला यह मुम्किन है कि जिस काम के करने को तुमने मना कर दिया हो, उसे मैं करूं! अजी हम औरतों के लिये शौहर से बढ़ कर दूसरी कौन सी चीज़ प्यारी हो सकती है। सो मैं तुम्हारी बात किसी और से कहूंगी? और बात भी निगोड़ी कैसी कि जिस से तुम पर आफ़त आये। जब ही तुम से ब्याही गई तब ही से मैं तुम्हारी लौंडी हुई, भला यह मुम्किन है कि तुम्हारी लौंडी ऐसा काम करे?

शम०। अरे, तू किसे चराती है? तू ने नहीं कहा तो फिर बात खुली क्यों कर?

नसी०। (आंख पोछ के) वल्लाह आलम, मुझे नहीं मालूम।

खैर, तुम से मैं एक बात कहती हूं, अगर ख़फ़ा न होवो तो कहूं।

शम०। कह।

नसी०। शुरू ही में अच्छा न हुआ। बुरी बात कब तक छिपी रह सकती है? एक रोज़ न एक रोज़ आप ही आप खुल जाती है। बुरी बात क्या किसी के कहने से खुलती है?

शम०। (गुस्से से) चुप रह, हरामज़ादी। ज़बान संभाल के बोल, कुत्ती। (लात मार के नसीमन को गिराना)

नसी०। (उठ के रोती रोती) क़सूर हुआ, मुआफ़ करो। बेवक़ूफ़ औरत की ज़ात, क्या कहने को क्या कह बैठी। (आंख मूंद के, और पास जा के) तुम्हारे पांव में चोट तो नहीं आई?

शम०। नहीं, नहीं जा, दूर हो सामने से।

[नसीमन रोती रोती गई।]

शम०। (चिन्ता करता हुआ टहलता है) क्या करूं, क्या नहीं करूं? ८००० रुपये, कुछ थोड़े भी तो नहीं हैं। मगर लौंडा कोई सुबूत नहीं दे सकेगा। फिर इतना खौफ़ क्या?—तो भी, थोड़ा ख़तर भी ज़रूर ही है। "दुश्मन नातवां हक़ीर ओ बेचारा शुमुर्द।" नः। जड़ ही साफ़ कर डालनी चाहिये। "न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुली।" घसीटा ने भी आ कर कुछ हाल नहीं कहा।

घसीटा का प्रवेश।

शम०। (तअज्जुब से) लो यह तो नाम ही लेते पहुंचे। पुलिस से अबकी क्यों कर बचे?

घसीटा। कुछ सुबूत हो तो तो पकड़े। लेकिन जमादार दारोगा की कुछ पूजा अर्जा चढ़ाना पड़ा था।

शम०। खैर कुछ पर्वा नहीं, मैं सब दूंगा। मगर यह तो बतलाओ कि लौंडे का क्या हुआ?

घसीटा। साहब, लौंडे ने तो बड़ी दग़ा की। सज्जाद सज्जाद नाम का एक सख़्स उस लौंडे को बचाइस। ऊ तो बड़के तेज़ आदमी मालूम होता है। सिपाहिउ को भी मार के गिराइस।

शम०। सज्जाद! कौन सज्जाद?

घसीटा। सुना है, उस का भी मकान बिहार ही में है। यहां तो बाकरगंज में उस का डेरा है।

शम० ओ अम्बेर वाला सज्जाद। उसी ने उस दिन हमारी मग़्माता को भी बेइज़्ज़त कर के निकलवा दिया था। (दांत मसमसा के) खैर हमने उस की बहन को निकाल के न लाया तो हमारा नाम शमशेर बहादुर नहीं। देखो, अबसबे लौंडे पर नज़र रखना। और सुनो सज्जाद की बहन को निकाल लाने की कोई तदबीर करो तो, वल्लाह, तुम्हें अमीर बना दूं।

घसीटा। (खुश हो के) जो हुकुम। कहिये तो आज ही ला कर हाजिर कर दें। (जी में) इसी तरह के जब तक कि दो एक ज़मीदार न हों तो हम लोगों का चले कैसे?

शम०। नहीं, नहीं। अंगरेज़ों की बादशाहत है। काम समझ बूझ के करना चाहिये। फिर वह भी बड़ा आदमी है। ख़ैर तुम अब जाओ। रात को ज़रा फिर आ जाना। जैसा जैसा करना होगा, मैं सब बता दूंगा।

[घसीटा का प्रस्थान।

शम०। (टहलता है) लौंडे की वह बात मालूम कैसे हुई, मेरी अक़्ल नहीं काम करती। खैर जो हो, जितना ख़र्च हो, डर की बात को दूर ही करना मस्लहत है।

[गया।

तीसरी झांकी।

पटना, एक सदर सड़क।

अब्बास और सज्जाद का प्रवेश।

सज्जाद। भाई क्या कहूं, जब कि गुलशन छ ही महीने की थी, और मैं दस बरस का हूंगा, कि अम्मा जाती रहीं। उस के थोड़े ही दिनों के बाद चार आदमी के कहने सुनने से बाबा ने फिर ब्याह किया। हमारी सौतेली मा नेक-मिज़ाज तो थीं। अपने बेटे की तरह मानती थीं। कह सकता हूं गुलशन उन्हीं की वजह से इतनी बड़ी हुई। हम लोगों को भी ठीक सगी मा की सी मालूम होती थीं। यह सब कुछ था मगर आदमी के जी की बात कोई नहीं कह सकता। बाबा के मरने के थोड़े ही दिनों के बाद बदकार ने अपने तईं ज़ाहिर किया। उस वक़्त उस की उमर २४, २५ बरस की होगी।

अब्बा। आप को यह बात क्यों कर मालूम हुई?

सज्जा०। ख़ानक़ाह के शमशेर बहादुर की भावज हलीमा—

अब्बा०। कौन, कौन?

सज्जा०। हलीमा। क्यों तुम उसे जानते हो?

अब्बा०। जी हां जानता हूं। मगर आप अभी सब हाल कह जाइये पीछे मैं भी सब हाल सुनाऊंगा।

सज्जा०। ग़रज़ वह उसी हलीमा से फंसा हुआ है। वह बदकार भी उस के यहां जाने आने लगी। आहिस्ते आहिस्ते यह बात

और और जगह भी फैलती चली। जब हम ने एक दिन पूछा कि "तुम उस फ़ाहिशा के यहां रोज़ क्यों जाती आती हो ?" तो उस ने कुछ जवाब न दिया, मगर बहुत देर तक हमारे मुंह की तरफ़ टकटकी बांधे देखती रही। मुझ से गुस्सा न संभल सका। मैं ने साफ़ उस के मुंही पर कह दिया कि "तुम भी वैसी ही हो। सब ही लोग तो ऐसा कहते हैं।" यह सुन के वह कुछ देर तक रोई, और फिर दूसरे दिन किसी से बे कहे सुने घर से चली गई। पांच रोज़ के बाद मुझे ख़बर मिली कि दर्या में डूब के मर गई। इस ख़बर को सुन के मुझे भी बड़ा अफ़सोस हुआ। क्यों कि कैसी हो क्यों न हो लेकिन हम लोगों की बेचारी जी से प्यार करती थी।

अब्बा०। उस की बदकारी का एक आद सुबूत और भी आप मालूम कर लिये होते। क्यों कि वह हलीमा जिस का आपने अभी नाम लिया, जितनी बदनाम है, दर हक़ीक़त उतनी बुरी नहीं है। हमारे बारे में शमशेर बहादुर की दग़ाबाज़ी का हाल उन्हीं ही ने मुझ से कहा था। इस के अलावे तोर तरीक़े से तो यह मुतलक़ बुरी नहीं मालूम होती। पस मुझे तो यह यक़ीन नहीं होता कि उन्हों ने अपनी ख़ुशी से यह फ़ाहिशेपन इख़्तियार किया हो। ख़ैर इस बात को जाने दीजिये, यह तो बताइये कि आप के वालिद ने क्या अपनी सब मिल्कियत आप की सौतेली मा के नाम से लिख दी थी ?

सज्जा०। अफ़्वाहन् तो यों ही सुनता हूं मगर मुझे यक़ीन नहीं होता।

अब्बा०। मैं ने सुना है कि उसी वसीले से शमशेर बहादुर आप पर नालिश करने वाला है। यह हाल हलीमा मुझ से—

नेपथ्य में शब्द और हुसेनी का प्रवेश।

हुसेनी। ए मियां, ए मियां दोठी गोरा दारू पीके सब को मार पीट रहा है। एक आदमी के घर में हेल के—

सज्जा०। ऐसा, चल बता तो कहां? आओ तो अब्बास, चल के भड़ुओं को बतायें।

[सब का प्रस्थान।

नरसिंह और हैदर का प्रवेश।

नरसिंह। देखना ही तो है कि मियां सज्जाद आज कहां तक बहस करते हैं। भला इतना लड़कपन!

हैदर। भाई, इसे लड़कपन कहते हैं? अजी यह दीवानेपन में दाख़िल है।

हेमचन्द्र का प्रवेश।

नर०। कहां चले?

हेम०। शभा में। आप लोग?

हैद०। चलिये हम सब भी वहीं जाते हैं।

नर०। आज आप किस तरफ़ हैं?

हेम०। हाम किशी तारफ नाईं है, हाम शाच बातकी तारफ है।

नर०। तब भी इस बारे में आप की राय क्या है?

हेम०। हाम राय टाय कूच नाईं बूझता है। विज्ञान का बढ़न्ती कोरा एही मानुष का आशल काम है। ई बात ही जाने ती आदमी जेशा चाहे वैशा करे। हाम को ईश में कूच उजूर नाईं है। ईशाक आर नाईशक हामारा नजदीक दोनों बराबर हाय। वैज्ञानिक शभा में एशा एशा बात का होना देना ही खाराप हुआ। शेरेफ शमय नष्ट कोरा हाय आर लाभ क्या?

[सज्जाद का प्रवेश ।]

ईदर। अरे आओ, आओ, सज्जाद। तुम्हारा ही ज़िक्र तो हो रहा था। चलो हम सब भी अन्जुमन ही जाते हैं। ख़ैर तुम ने जो उस रोज़ सब-इन्स्पेक्टर को मारा था उस का क्या हुआ ?

सज्जाद। होगा क्या? अंगरेज़ मुद्दई, और हिन्दुस्तानी मुद्दाअलेह होने से जो होता आया है वह हुआ। मुझ पर २०) रुपया जुर्माना किया गया : तमाशा यह कि पहले उसी ने मारा था। मैं ने अपील की दरख्वास्त दी है, देखिये क्या होता है?

नरसिंह। "अंगरेज़ों की सल्तनत" नाम एक आर्टिकल जो "चश्मे फ़ैज़" में छपा है, वह क्या तुम्हारा ही लिखा हुआ है ?

सज्जाद। क्यों ?

नरसिंह। सुनता हूं, उस के लिये गवर्नमेन्ट तुम्हारे नाम से नालिश करने वाली है।

सज्जाज। जुर्म ?

नरसिंह। बग़ावत और झूठ तुहमत।

सज्जाद। (मुसकुरा के) अच्छा, समझ लूंगा।

ईदर। नहीं, नहीं, फ़िलहक़ीक़त ज़रा होशयार रहना।

हेम०। आर देखिये आप का ए कोशिश एक रकम शे बेफायदा हाय। विज्ञान का तोराक्की होनेई शे देश का ताराक्की हागा।

सज्जाद। ऐ लो, फिर आप ने वही पुराना झगड़ा निकाला।

नरसिंह। हमारे जहां जोरू को "अर्द्धांगी" यानी "अपना आधा बदन" कहा है, और सच पूछो तो बात भी यों ही है। सो देखो हरचन्द तुम्हारा मक़सद नेक है, और तुम्हारी अक़्ल भी तेज़ है,

मगर (हंस के) चूं कि तुम्हारा "अधा बदन" ही गायब है, इसी से तुम सब बातों की अच्छी तरह समझ नहीं सकते।

सज्जाद। आज बहस में अगर तुम लोग मुझे हरा सके, तो तुम ही लोगों पर हमारे लिये एक "अर्धांगी" चुनने का भार दिया जायेगा।

हैदर। इन्शा अल्लाह ताला।

नरसिंह। बहुत खूब, मन्जूर है।

सज्जाद। विलायत फ़र्माइश भेजोगे क्या?

हैदर। भला पूछो हो, झाड़, फ़ानूस, घड़ी, कल की तरह फ़र्माइशी बीबियां विलायत से बक्सों में बन्द कर कर के आतीं तो फिर झखना किस बात का था?

नरसिंह। क्यों हेम बाबू आप अपने विज्ञान के ज़ोर से कोई तर्कीब इस की नहीं निकाल सकते? एक आद बन्दरी को पकड़ कर सुन्दरी नहीं बना सकते?

हेम०। हाम लोग बांदोर का लेड़का बाला है, ई बात ठो आप लोग बूझता नेई है, इशी वाश्ते इश रकम ठाट्टा कोरता है। आप लोग जोटी मन दे कर शुनिये तो आबी हाम आप को आच्छी तारह शे बूझाय देने पारेगा।

सज्जाद। चलिये चलिये वक्त हो चुका।

[सब का प्रस्थान।

शमशेर बहादुर और घसीटा का प्रवेश।

शमशेर। मैं ने छिपे छिपे इस बात का पता लगाया है कि वह पटने ही में हमेशा रहता है। कभी कभी बरस छ महीने में

एक आद बार मकान जाता है। खुदा के फ़ज़्ल से वह भी हम लोगों के एक गाँ ही की बात है।

घसीटा। बड़ी बड़ी मुश्किलों से छ आदमी जुटे हैं। मगर कोई भड़ुआ अगुआ होना नहीं चाहता। कहते हैं कि आदमी का चुराना ठहरा, कुछ ठट्ठा है?

शमशेर। डर किस का है? अज़ी मैं पानी की तरह रुपये बरसाऊंगा। रुपये से क्या नहीं होता?

घसीटा। हां ओर क्या, यह तो ठीक ही है। और अउल बात भी यही है कि वह लोग कुछ और बेशी मांगते हैं।

शम०। कितना?

घसी०। आदमी पीछे पचास रुपया। और दस आदमी जुट जायें तो बहुत हैं।

शम०। कुछ—ज़ियादे—होता—है। ख़ैर वही सही। मगर भाई ज़रा जल्दी करना चाहिये।

घसी०। सो आप को कहना नहीं पड़ेगा। एक हफ़्ते के भीतर छोकड़िया को लाके आप के सामने खड़ा कद दें तब आप रुपया दीजियेगा, नहीं तो एक पैसा लें तो वह मेरे लिये हराम है।

शम०। (खुश हो कर) अः, ऐसा जो कर सको भाई, तो फिर क्या कहना है? आओ, रुपया ले जाओ।

[दोनों का प्रस्थान।

चौथी झांकी।

पटना मुरादपुर, सायन्टिफ़िक ऐसोसियेशन।

सज्जाद। (वक्तृता पढ़ रहा है।) इस बारे में ज़ियादा और में कुछ नहीं कहा चाहता। और सच पूछिये तो अब और कुछ कहने को है भी नहीं। मख़्सूस अन्जुमन के और आप लोगों के बेशक़ीमत वक़्त को ज़ाया कराने का मुझे कोई इख़्तियार नहीं। ऊपर जो कुछ कह आया हूं, उसी से साफ़ ज़ाहिर है कि इस दुनिया में सब तरह की बुराइयों का गोया चश्मा वही, वही मन्हूस इश्क़ है। ऐसी और कोई बात नहीं है, ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो इन्सान को हर तरह के लामहदूद ख़तरा आफ़त और मुसीबतों का शिकार बनाती हो जैसा कि यह इश्क़ बनाता है। (तालियां बजती हैं।) सिर्फ़ इश्क़ फ़ासिक़ हो—जिसे लोग बुरा समझ के नफ़रत करते हैं—सिर्फ़ इश्क़ फ़ासिक़ ही नहीं बलकि हर तरह का इश्क़ ख़ाह वह फ़ासिक़ हो या सादिक़ हर तरह की बुराइयों की वजह और जड़ है। पस अक़्लमन्दों को लाज़िम है, ख़ास कर अन्जुमन-इ-सायन्टिफ़िक ऐसोसियेशन के मिम्बरों को, कि अपने अपने दिलों के क़िलओं को ऐसा मज़बूत बनाये रक्खें कि इस हेकड़ दुश्मन की उन पर दाल न गलने पावे। किसी शायर ने ख़ूब कहा है—

"क्या मैं इस काफ़िरे बदकेश का अहवाल कहूं,
यही ख़ूंख़ार पिया करता है आशिक़ का ख़ूं।
ज़ार कर देता है इन्सान को यह और ज़बूं।
रफ़्ते रफ़्ते यही पहुंचाता है नौबत बजनूं।

यही ख़ूंरेज़ तो ख़ूंख़ार है इन्सानों का,
दीन खोता है यह, काफ़िर है मुसल्मानों का।

"यही करता है हर एक शख़्स को रुस्वा, ज़ालिम,
यही करता है हरएक चश्म को दर्या, ज़ालिम।
कोह दिखलाता है गाहे, गहे सहरा, ज़ालिम।
क्या बताऊं तुम्हें करता है यह क्या क्या ज़ालिम?
दरबदर ख़ाक बसर, चाक गिरेबां कर के,
जान लेता है वले बेसर ओ सामां कर के।

"यही बानी तो ज़ुलैख़ा की भी था ख़ारीका,
यही बाइस दमन ओ नल की हुआ ख़्वारी का।
यही फ़र्हाद के हामी था तबरदारी का,
इश्क़ कहिये न इसे क़हर है यह बारी का।
तल्ख़ कामी हुई, शीरीं की इसी से हासिल,
किये बेपर्दे ओ बरबाद हज़ारों महमिल।

"इसने मज्नूं से बनाये हैं बहुत दीवाने,
इसने ख़ुदरफ़्तगी में अपने किये बेगाने।
गोकि मश्हूर हैं जहां इस के हैं सब अफ़साने,
पर जो इस काम का मश्शाक़ हो वही जाने।
कभी माशूक़ के पर्दे में निहां होता है,
कभी सर चढ़के यह आशिक़के अयां होता है।

"एक शिम्मा है लिखा हाल जो मैंने इस का,
जिस पे इस देव ने अल्ताफ़ का साया डाला ।
इश्तेगुबंत में वह आवार: औ सरगश्ता हुआ,
दोस्त भी छूटते हैं, शहर भी छोड़े अपना ।
पास जिस के यह गया, खल्क़से वह दूर हुआ,
कौन सा शीश-इ-दिल था कि न वह चूर हुआ ।

इस शजर-इ-इश्क़ के ज़हरीले फल ऐसी कसरत से लगे हैं कि उन का शुमार तसव्वुर भी नहीं कर सकता। बाज़े बेवक़ूफ़ समझते हैं कि ख़ालिस इश्क़ गोया ख़ाने खुशी है, बलकि ज़ीनें मज़हब है, मगर सच पूछिये तो ख़ालिस हो या कोई हो इश्क़ गुलामी या नफ़्सपरस्ती का दूसरा नाम है। (तालियाँ बजती हैं।) इश्क़ इन्सानियत को गायब कर देता है, खुदा ने जिन हवासों को इन्सान के दिलों में मुल्क को भलाई के लिये पैदा किया है, उन्हें यह इश्क़ सिकुड़ाये डालता है, और हुब्बे वतन को तो एक बारगी इन्सान के दिल से नेस्त औ नाबूद ही कर छोड़ता है। ज़ियादे और क्या कहें, इन्सान जिसे खुदा ने अशरफ़-उल मख़्लूक़ात पैदा किया है, उसे यह शैतान हैवान से भी बदतर बना छोड़ता है। जिस इश्क़ के ऐसे ऐसे नतीजे हैं, वह इश्क़ क्या, हम आप ही लोगों से सवाल करते हैं, ख़ाने खुशी या ज़ीनें ऐनइब हो सकता है? (कभी नहीं, कभी नहीं।) पस अगर हम लोगों में कुछ भी इन्सानियत है, अगर इस अन्जुमन के फ़ाइदों ने कुछ भी हम लोगों के दिल पर असर किया हो, तो आइये, सब के सब एक दिल

हो कर वादा करें कि जब तक अक्ल साबित है, तब तक कभी भूले भटके भी इश्क़ की राह के मुसाफ़िर न होवें, कभी इस हकीर दुश्मन की गुलामी न क़बूल करें,—कभी नहीं, हरगिज़ नहीं, मरने पर भी नहीं। (तालियां बजती हैं, और सज्जाद बैठता है।)

१ला मिम्बर। हज़रात, मौलवी सज्जाद हुसैन साहिब की तहरीर निहायत उम्दे और दिलचस्प हुई है। पस मैं तहरीक करने की इजाज़त मांगता हूं कि उन को हम लोगों की गर्म शुक्रगुज़ारी दी जावे। (तालियां बजती हैं।)

२रा मिम्बर। मैं जी से इस तहरीक की ताईद करता हूं। मगर इस बात को बेकहे नहीं रह सकता कि तहरीक अंगरेज़ी तौर की न हो कर अपने हिन्दुस्तानी तौरकी होती तो क्या अच्छा होता? "गर्म शुक्रगुज़ारी" का क्या मतलब? (हंसी, और तालियां बजती हैं।)

नरसिंह। दूसरों का दोष ढूंढना यह भी मनुष्यों का एक स्वाभाविक धर्म है। पहले वक्ता की भाषा दोषवर्जित थी, यह मैं नहीं कहता परन्तु दूसरे वक्ता को क्या पूरा विश्वास है कि उन से कोई वैसी ही भूल नहीं हुई? अंगरेज़ी में एक कहावत है कि "जो शीशे के बने मकान में रहते हैं, उन्हें दूसरों पर ढेले नहीं चलाने चाहियें।"

मौलवी सज्जाद हुसैन साहिब धन्यवाद के योग्य हैं इस में कुछ भी सन्देह नहीं। परन्तु उन से मैं एक बात पूछता हूं—केवल एक ही बात। माना कि प्रीति बुरी वस्तु है, और विज्ञान की सहायता से इन्द्रिय-संयम भी कर ले सकते हैं, परन्तु ऐसा होने से ईश्वर की

सृष्टीकी रचा क्यों कर होगी? विज्ञान की उन्नति का, या सभ्यता के फैलने का फल क्या यही हुआ कि मनुष्य निर्वंश हो जावें? आदमी की सूरत इस पृथिवी में न देख पड़े? (तालियां बजती हैं।) फिर विज्ञान की सहायता से ईश्वर की दी हुई इन्द्रियों का दमन होना क्यों कर संभव है? यह बात भी हमारी छोटी बुद्धि में नहीं समाता। (तालियां बजती हैं।)

सज्जाद। बाबू नरसिंह सहाय के सवाल के जवाब में इतना कहना काफी होगा कि विज्ञान की तरक्की की हद नहीं है। मुम्किन है कि विज्ञान की मदद से बग़ैर ब्याह शादी किये भी बेटा बेटी पैदा कर सकें। मैं ने सुना है कि नामी फ़रान्सीसी हकीम कोम्ट की भी यही राय है। मगर जब तक कि विज्ञान की मदद से आदमी बना लेने की कोई हिकमत नहीं निकलती, तब तक, बड़े अफ़सोस की बात है—जिस तरह किसी मरज़ को दूर करने के लिये कड़वी दवायें खाते हैं, वैसे ही ब्याह के जंजाल में फंसना पड़ेगा। ब्याह करो, मगर प्रेम की नज़र से नहीं—इश्क़ की नज़र से नहीं—सिर्फ़ फ़र्ज़ अदा करने की नज़र से। अगर आंखें हमारी इस बात में दुश्मन हों, तो उन्हें फोड़े डालेंगे, अगर दिल हमारा दुश्मन हो तो उसी तलवार से दो टुकड़े कर डालेंगे। अगर इतना भी न हो सका तो फिर हम लोगों की तालीम का क्या नतीजा निकला? अगर दिल की एक अदनी ख़ाहिश को न रोक सके तो तुफ़ है हम लोगों की ज़िन्दगी पर, तुफ़ है विज्ञान को, तुफ़ है हम लोगों की इस अन्जुमन को। (तालियां बजती हैं।)

हैदर। (आप ही आप) देखना ही तो है कि यह घमन्ड कब तक निभता है ?

सभापति। (चश्मा लगा के खड़े हो के ओर चारों तरफ़ देख के) सब के कहने से जाना गया ओर सचमुच मौलवी सज्जाद हुसेन की लिखावट बहुत ही चोखी ओर खरी हुई। इस लिये मैं सब मिम्बरों की ओर से उन का गुन गाता हूं। (तालियां बजती हैं।) मगर मौलवी सज्जाद हुसेन साहिब को मैं चिता देता हूं कि आगे ओर कभी अन्जुमन में कौम्ट साहिब से आदमियों का नाम न लिया करें। जो आदमी करतार को नहीं मानता उस के नाम लेने से पाप होता है, सुनने से भी पाप होता है। (तालियां बजती हैं।)

अब मैं आप लोगों से एक दो बातें दोस्ताने नसीहत के ढंग पर कहता हूं, आप लोग कान धर कर जी लगा के सुनें। इन महीन बातों को मैं ने बहुत दिनों तक सोचने के बाद बड़े बड़े मुश्किलों से निकाला है। इस सभा के सब मिम्बरों को चाहिये कि ऊपर मुंह किये चला करें।—इस ढंग से।—क्यों कि हम लोगों का मन सदा ऊंची ऊंची बातों के सोच बिचार में व्याकुल रहता है। ओछी ओर खोंटी बातें हम लोगों के मन में नहीं पैठने पातीं। ओर हम लोगों को चाहिये कि मन का सब सोच बिचार बाहर खोला करें, नहीं तो हम लोग कपटी कहलायेंगे। दूसरी बात यह है कि हम लोग गहरे सुभाव के हैं। कहिये कि हम लोग सदा गहरी बातों पर सोच बिचार किया करते हैं, इस लिये हम लोगों को चाहिये कि सदा धीर ओर चुपचाप हो के चला करें। यानी चलते वक़्त दोनों हाथ न हिलने पावें, पंजरों से सटे रहें।—इस ढंग से—।

तीसरी बात यह है—इस धरती से हम लोगों का थोड़े दिन का नाता है इस लिये चाहिये कि धरती से जितना अलग रह सकें उतना रहें। सारे पैर को धरती पर रखदेना नहीं चाहिये। अंगूठे पर भार देके चलना चाहिये।—इस तरह—।——आज रातें इत्यादि आगई, आनेवाली सभा में इसी बात को अच्छी तरह खोल के कहेंगे। अब सभा तोड़ी जाय, और जो लोग हमारी राय भली समझते हैं, उन को चाहिये कि जो बातें मैं कहि आया, उनका आज ही से बर्ताव करें।

(सभापति को धन्यबाद देके सभा का उठना। सभापति के पीछे पीछे चार आदमी ऊपर लिखे अनुसार चलते हैं और ठेंस के लगने से गिर पड़ते हैं।)

सभापति। एक गहरी बात के सोच बिचार में डूबा था। इस छोटी धरती की छोटी सी चीज़ के ठोकर से गिर पड़ा। कुछ भी अचंभे की बात नहीं। इस अंधियारे संसार में जिन जिन आदमियों ने बिज्ञान का चांदना फैलाना चाहा है, सब ही को इस इस तरह की तकलीफें उठानी पड़ी हैं। इस राह का यही इनआम है।

(उठ कर फिर वैसा ही चलते हैं।)

[सज्जाद के सिवा सब का प्रस्थान।

[हुसैनी का प्रवेश।]

सज्जाद। क्या है रे, यहां क्यों तू आया है?

हुसैनी। बिहार से एक आदमी ई चीठी ले आइस है! दीवान जी भेजिन हैं, और कहिन हैं कि जैसे पहुंचोगे वैसे ही मियां के हाथ में दीजियो, घर पर क्या जो हो गया है।

[चीठी दे कर प्रस्थान ।

सज्जाद । (चीठी पढ़ कर) ख़त में तो कुछ भी साफ़ नहीं लिखा है। मालूम हुआ कुछ है वै नहीं, हमें बुलाने की यह तरकीब है। मैं वहां इस वक्त किसी तरह से नहीं जा सकता। मुझे आज कल यहां बहुत काम हैं। (सोच के) यही सलाह ठीक है। अब्बास को वहां भेज दूं। उसे खुद भी बिहार जाने की ज़रूरत है। हलीमा ने उसे बुला भेजा है। (चीठी का फिर पढ़ना।) सुम्बुल और गुलशन को बहुत दिनों से नहीं देखा है। उन लोगों के पास बड़ा जी लगा है। एक बार ज़रा उन्हें देख ही आया होता।

[प्रस्थान ।

चौथा अंक।

पहली झांकी।

बिहार, अमेर, सज्जाद हुसैन का रनवास।

सुम्बुल और गुलशन बैठी हैं।

सुम्बुल। (चीठी पढ़ती है।)

बांकीपुर।

२४वीं फ़रवरी, १८०४।

सुम्बुल,

मियां अब्बास के हाथ इस ख़त को भेजता हूं। इनका क़िस्सा इन्हीं के मुंह से सुन लेना। इन से न तुम और न गुलशन लिहाज़ शर्म रखना। इन्हें नेकी का पुतला कहें तो बजा है। ये निहायत ही ख़लीक़ शाइस्ते और नेक-मिज़ाज हैं। इन की चालचलन निहायत ही पाक है। इन को ठीक हमारे छोटे भाई के बराबर मानना। दूसरा मत समझना।

तुम्हारा ख़ैरख़्वाह

सज्जाद हुसैन

(हंस कर) तुम्हारे भइया जहां जाते हैं, वहीं उन को भाई बहुत मिल जाया करते हैं। ए मामा-आ।

नेपथ्य से। जी, पहुंची।

[दाई का प्रवेश ।]

सुम्बुल । ए मामा, जिन्हों ने इस खत को लाया है, उन को अपने साथ अंदर लिये आश्रो ।

दाई । बीबी, वह कौ हैं ?

सुम्बुल । (मुस्का के) वह मियां सज्जाद के रिश्ते में भाई होते हैं ।

(दाई गई, और अब्बास को ले कर लौट आई ।)

सुम्बुल । आइये, यहाँ तशरीफ लाइये । (दाई से) मामा, तुम ज़रा इन के नाश्ते का सामान करदो ।

[दाई का प्रस्थान ।

सुम्बुल । आप खड़े क्यों है, बैठ न जाइये । (अब्बास बैठ गया ।) रास्ते में आप को किसी बात की तकलीफ तो नहीं हुई ?

अब्बास । जी नहीं ।

गुलशन । (सुम्बुल से, धीरे धीरे चीठी पढ़ती है ।) "इन को ठीक हमारे छोटे भाई के बराबर मानना । दूसरा मत समझना । इन से न तुम और न गुलशन लिहाज़ शर्म रखना ।" भइया का परवाना आया है । हमारी बलइया सुनती है । जिस को चाहेंगे उस को छोटा भाई बना कर भेज देंगे, और हमलोग भी उन से लिहाज़ शर्म न रक्खा करें तो जगह चाहिये । आपा तुम ही उन से बोलो, मुझ को तो उन से बात चीत करते शर्म मालूम होती है ।

सुम्बुल । (हंस के धीरे से) वल्लाह, वह जो कहते हैं; सो हक़ीक़त में सच है, तुम फ़ीलहक़ीक़त ख़ब्ती हो ।

गुलशन। (धीरे से) जी रहने दीजिये, तुम्हारे तारीफ़ करने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारी बला से, मैं ख़ब्ती ही सही।

(कलेजा लेकर दाई का प्रवेश।)

(सुम्बुल और दाई दोनों मिल कर दस्तरख़ान आदि बिछाती हैं।)

[दाई का प्रस्थान।

सुम्बुल। आइये, थोड़ा नाश्ता कर लीजिये।

(अब्बास बैठता है।)

सुम्बुल। ऐ है, आप शरमाते क्यों हैं? हम दोनों आप की बहन हैं, या कोई दूसरी हैं। देखिये, देर न कीजिये, आइये बिसमिल्लाह कीजिये।

गुलशन। (सुम्बुल की तरफ़ धीरे से) तुम्हारा जी चाहता हो, तुम बहन बनो, ख़ुदा के लिये मुझे भी क्यों सानती हो?

सुम्बुल। माशाअल्लाह, मुझे क्यों नाहक़ बदनाम करती हो, भाई पर चाहो जितना ख़फ़ा हो लेना। (अब्बास से) माशा अल्लाह सिनहा, वह आप इतनी तकल्लुफ़ क्यों कर रहे हैं?

अब्बास। (शर्मा के) आप मुझे "आप" "आप" कहती हैं, इसी से मैं शर्मा रहा हूं।

सुम्बुल। (मुस्का के और अब्बास के पास बैठ के) अच्छा भाई खाओ। लो अब तो हुआ न? (गुलशन से) ज़रा तुम भी तो कहो, शायद तुम्हारी बात मान लें।

गुलशन। (मुंह नीचा कर के और शर्मा के) खाइये।

सुम्बुल। सो नहीं, कहो "ज़रा खालो।"

गुलशन। (शर्मा के आधा कहना।) "ज़रा खा—"

अब्बास। (जी में) माशाअल्लाह, यह कैफ़ियत मैं ने कभी नहीं देखी। कहां ये और कहां मैं। मैं समझता था कि औरतें पढ़ लिख कर मगरूर हो जाती हैं। (खाता है।)

सुम्बुल। आज ये राह के थके मांदे होंगे। इस वक्त, इन्हें तकलीफ़ देनी लाज़िम नहीं। कल इनका सारा क़िस्सा सुन लेंगे। चलूं, इन्हें सोने की जगह बतला आऊं।

अब्बास। अभी तो शाम ही हुई है। मैं ज़रा टहलने जाऊंगा।

सुम्बुल। बेहतर, जी चाहे घोड़ा कसवा लो। लौटोगे कब तक?

अब्बास। घंटे दो एक के बाद लौट आऊंगा।

[अब्बास का प्रस्थान।

[दाई का प्रवेश।]

दाई। बीबी, दीवान जी कहिन हैं कि हम तो चीठी भी लिख चुके, पर तब भी मीयां न आये, अब हम क्या करें। और कहिन है कि हमारे लिखे से नहीं आवें हैं, तो एक बेर तुम सब भी लिख के देखो। बीबी समसेरबहादुर का हाल जो आदमी सब आ आ के कहें हैं, ऊ सुन सुन के तो हमारी छाती उड़ी जाय है। उन के हियां का जो २०, २५ बदमास सब पटने से आ आ के नौकर रहे हैं, आउर ५, ४ गोरा सब भी नोकर हैं।

गुल०। भाभा क्या सच हो? आपा, मुझे तो बड़ा डर मालूम हो रहा है।

सु०। गुलशन डर की बात भला कौन सी है? अरे नव्वाबी तो अब है नहीं, कि यों ही कोई किसी को लूट लेवे। अंगरेज़ बहादुर का राज है, क्या मकदूर कि कोई किसी की तरफ़ अंगुली देखा सके।

दाई। बीबी की बात! गांव गंवई में अब भी जमीदार इतना जुलुम करें हैं, कि सुनो तो तुमरा बदन सिहर उठे। बीबी रुयायें का हाल सुनोगी? हमारा नइहर तो दूरै न है। वहां के—

सु०। मामा, मैं सुन चुकी हूं, तुम हो ने तो उस दिन कहा था। (मुस्कुरा के) भला तब भी डर क्या है? आख़िर मियां सज्जाद भी तो ज़मीदार है।

दाई। सो क्या बीबी, पांचों अंगुली का बरोबर होवे है? हमरे सज्जाद मियां के ऐसे या बरबीघा के सूरजकुमार बाबू के ऐसे केतो ज़मीदार हैं?—सो जो होय, बीबी, तुम भी एक चिट्ठी लिख के देखो देखो ऐसा करो, जिस में मियां जल्दी आवें।

सु०। अच्छा। (जी में) नेकी और पूछ पूछ के?

[सब का प्रस्थान।

दूसरी झांकी।

बाग़।

(अब्बास का प्रवेश।)

अब्बास। हलीमा ने आज मुझे यहां बुलवा भेजा है। उन्हें कोई ज़रूरी बात कहनी है। अल्लाह कौन सी ज़रूरी बात है? यहां से ख़ानक़ाह डेढ़ कोस के अंदाज़ होगा, मैं तो हैरान हूं कि वह आयेंगी क्यों कर? शमशेर बहादुर को तो ज़रूर मालूम हो जायगा। (इधर उधर टहलना।) अभी आठ नहीं बजे होंगे। (चारों तरफ़ देख के) सारी दुनिया में इस वक़्त सन्नाटा छाया है। अहा, चांद

को किरनों से सारा मैदान चांदी से पिटा हुआ मालूम हो रहा है। ये दरख़्त हैं, कि शाखें इन की चांदी से गोया मंढी हैं। वह रेत है, कि अलग झोझमक रही है, गोया कि सोने चांदी के ज़र्रे उस में छिड़क दिये हैं। हवा के झोंके जो पत्तों में लगते हैं तो ब़िऐनहू ऐसा मालूम हो रहा है गोया कोई लड़का तोतली २ बोलियां बोल रहा है?—अहा, वह देखो, कोई बैपारी, जो अपने साथियों से छूट गया है, बैलों को टख़टख़ाता और गाता चला आता है। इधर धोबी भी अलग गधों पर मोट लादे तान लगाता चला जाता है।—वाह, हवा तो एक अजीब कैफ़ियत दिखला रही है। यह तो गोया मुझ से बातें करती है। हैं, हवाने हमारे दिल की बातें क्यों कर जान लीं? माशाअल्लाह यह तो गोया मुझे नसीहत कर रही है कि "लड़के, यह क्या तू लड़कपन करता है? कहां वह, और कहां तू? छोड़ दे उस ख़याल को।" वाक़ई हमारी यह बेवक़ूफ़ी है। वही मसल है कि "शौक़ीन बुढ़िया चटाई का लहंगा।"

[एक डोली लिये गाते हुए चार कहारों का प्रवेश।]

[हलीमा का प्रवेश।]

अब्बास। आइये मैं घंटों से आप के मुन्तज़िर खड़ा हूं। भला यह तो कहिये, आप आईं क्यों कर? शमशेर बहादुर को तो ज़रूर मालूम हुआ होगा।

हली०। उसे एक नई नायका मिल गई है, इस वक़्त वह उसी के पीछे दीवाना है; हमारी खोज ख़बर नहीं करेगा।

अ०। शायद, अगर खोज ख़बर करे?

हली०। करने दो, हमारी बला से। (भीषण स्वर से) यह हालत कब तक रहेगी? उस की छाती का लहू न चूसा, उसे मिट्टी में धुलटा धुलटा के न मारा, तो नाम क्या?

अ०। (डर से) क्यों, क्यों, उन पर इतनी ख़फ़गी क्यों?

ह०। कहते हो, इतनी ख़फ़गी क्यों? तुम तो, बेटा, अभी लड़के हो, क्या जानोगे? अजी, औरतें मुहब्बत करने जानती हैं, बलकि मुहब्बत के पीछे अपना सर्बस छोड़ दे सकती हैं, मगर बिगड़ीं तो फिर अल्लाह की पनाह! ऐसी बिगड़ती हैं, ऐसी बिगड़ती हैं, कि अगर मल्कुलमौत हो तो वह भी एक बार थर्रा जाय। बेटा, पूछते हो इतनी ख़फ़गी क्यों?

अ०। (जी में) अल्लाही ग़नी, यह गुस्सा! (प्रकाश।) मियां शमशेर बहादुर ने क्या आप का कुछ बिगाड़ा है?

ह०। कुछ बिगाड़ा है बिगाड़ना और अब किसे कहते हैं। ऐ लो सुनो। हमारे शौहर जिस वक़्त ज़िन्दे थे उसी वक़्त यह गुनहगार मुझ को अपने नज़रों पर चढ़ा चुका था। उन के सामने तो इन की कुछ दाल नहीं गलने पाती थी। और मियां के ज़िन्दे रहते (रो के) औरत का बिगड़ना भी दुशवार है। मख़सूस (रो के) वह हमें बहुत ही प्यार……। जब कि इस कमबख़्त ने देखा कि हमारे शौहर के जीते रहते में मुराद बर आने की नहीं, तो क्या किया (रो रो के) कि किसी तरह उन्हें क़तल करवा डाला। जब दो दिन तक वह हमारे पास नहीं आये तो हमारी तबियत बेतौर घबराई, आदमियों को इधर उधर भेजा, तमाम तालाश करवाया, पर पता कहां गेसे ल? हां तब तो? तीन दिन के बाद ख़बर सुनने में आई कि ११

बजे के वक़्त एक पोखरे में उन की लाश पाई गई। (रोना) मैं ने जो लिखा था, वही बात आख़िर पेश आई। अब क्या करूं, करम ठोक के बैठ रहीअ . सुनती हूं बसीटा बसीटा नाम कोई बदमाश है उसी ने मारा था। निगोड़ा थाना फ़ौजदारी भी ग़रीब ही के लिये है, बड़े आदमियों का कुछ नहीं होता। आख़िर ये अभी तक बचे हुए हैं ही न हैं। इस के आठवें महीने, रमज़ान का महीना आया। उन्नीसवीं तारीख़ को, कि जिस दिन मैं रोज़ों से बहुत ही कमज़ोर हो गई थी, तीन बजे के वक़्त एका एक हमारे ह्न बह आप भी के खड़े हो गये। दाइयों को रुपये उपये दे कर अपने अख़तियार में कर रक्खा होगा। मैंने लाख पुकारा पर किसी ने जवाब न दिया। कितना रोई, कितना गिड़गिड़ाई पर कौन सुनता है। "चोर सुने धरम को कहानी।" एक तो औरत दूसरे रोज़ों से कमज़ोर कहां तक क्या करती? बचने की जब कोई तदबीर न सूझी, तब मैंने यही सोचा कि गले में फांसी लगा के मर जाना बिहतर है। मगर बदकार ने वह भी करने न दिया। तब मैंने चाहा कि खाना तो अपने अख़तियार है, न खाऊंगी, दो तीन रोज़ तक बराबर भूखी रहूंगी, बस मर जाऊंगी। मगर उस गुनहगार दोज़ख़ी से कौन बच सकता है। ज़बरदस्ती चमचों से दूध पिलवा देता। जब मैं कुछ कहती तो हंस के उड़ा देता, और सूअर सा मुंह बना के कहता कि "नाज़िनी, तुझे मैं दिल औ जान से प्यार करता हूं।" इसी तरह १०, १५ दिन गुज़रे, तो मैं ने यह सोचा कि अब हमारी पाकदामनी में दाग़ तो लग ही चुका, अब नाहक़ मरने की तदबीर क्यों करूं। मगर मैं ने अपने जी में उसी वक़्त वादा किया था

(दांत पर दांत ससमसा के) कि आज ही या कल ही, एक रोज़ न एक रोज़, इस के खून से मैं ज़रूर नहाऊंगी। उसी वक़्त से मैं घात में लगी हूं।

अ०। (जी में) गुस्से की यह वजह है।—तब तो शमशेर-बहादुर को यह मारेगी ज़रूर, देखा चाहिये कब मारती है मगर वह बदमाश हो चाहे कुछ हो उसे मारने देना मुझे लाज़िम नहीं। उसी ने हमारी परवरिश की है। उसे एक गुमनाम ख़त लिख के होशियार कर देना मुनासिब है। मगर ऐसा लिखना चाहिये कि इस पर कोई आंच न आने पावे। इसे मुझ पर इतमाद है।

ह०। मैं अब रुख़सत होती हूं, रात ज़ियादा आ गई। जब से उस ने तुम्हारा वह ख़त पाया है, बेतोर घबरा रहा है। होशियार रहना, मियां सज्जाद को भी होशियार रहने कह देना। यह तो मैं खूब जानती हूं, कि तुमलोगों का वह कुछ नहीं कर सकेगा, पर तब भी मसल मशहूर है कि जागते को किसी बात का डर नहीं। और तो मैं अब जाती हूं।

[अब्बास के सलाम का जवाब दे के गई।

अ०। अब वह हमारा क्या करेगा। हमें तो अब उसी की फ़िक्र पड़ी है। अब मैं भी चलूं, न मालूम जी में वे क्या कहती होंगी, कि क्यों इतनी देर हुई।

[गया।

तीसरी झांकी।

पटना, मुख़्तार का डेरा।

[शमशेर बहादुर और घसीटा का प्रवेश।]

शमशेर। सनीचर के रोज़ रात को, ठीक ११ बजे। मैं साथ नहीं जा सकता। शायद कोई पहचान ले, समझे न? तुम लोग दो गोल बांध के जाना। एक गोल जाके सदर दरवाज़ा घेर लेना, और उसी तरफ़ से हेल जाना। और दूसरा गोल मकान के पीछे सीढ़ी लगाके चढ़ाई करे, और छप्पर फांद फांद के अन्दर घुसे। इतने बखेड़ों की कुछ ज़रूरत न थी, मगर फिर भी जो कुछ किया उसे पक्का ही करके किया। और देखो, उन गोरों को जो मुक़र्रर किया है, वह भी साथ रहें। वह कुछ करें चाहे न करें, पर उन के साथ ही रहने से बड़ा काम निकलेगा। मुफ़ेद मुंह को देखते ही काले हिन्दुस्तानी फ़ौरन डर जाते हैं।

घसीटा। वह राज़ी हों तब न?

शम०। दुर बेवकूफ़, अंगरेज़ की ज़ात है या कोई और है? रुपये हों, तो चाहो इन की ज़ात की ज़ात ख़रीद लो। रुपये ही के लिये न ये सात समुन्दर पार उतर के यहां आये हैं।

घसी०। तो फिर क्या कहना है?

शम०। हर्बे हथियार से मुस्तैद हो के जाना।

घसी०। गोरे भड़ुओं के हाथ में क्या देंगे?

शम०। उन के हाथ में कुछ न भी रहे तो कुछ मुज़ायका नहीं। अरे वह तो आप ही एक एक आदमी एक एक भैंसे से ही रहे हैं।

बसी०। और काम पड़े तब ?

शम०। काम पड़े तो एक एक तलवार दे देना। मगर खूब समझ बूझ के। कहीं ऐसा न हो कि उलटे तुम ही लोगों पर हाथ साफ़ करने लगें। ऐसी पाजी ज़ात दुनिया में और दूसरी नहीं। ख़ैर तुम अब इस वक़्त जाओ, कल सबेरे ज़रा फिर मुलाक़ात करना।

बसी०। बहुत खूब।

[सलाम कर के गया।

शम०। इधर की बात भी पक्की कर लें। अरे जुमना-आ-आ।

नेपथ्य से। जी-ई-ई।

शम०। अरे, मुख़्तार साहिब कचहरी से आये ?

नेपथ्य से। जी हां, आये।

शम०। इधर भेज तो दे।

[हेमन लाल मुख़्तार का प्रवेश।]

(सलाम बंदगी का होना।)

शम०। कहिये मुख़्तार साहिब, मुक़द्दमे की अर्ज़ीदावी तय्यार की ?

हेमन०। आप किस बुनियाद पर मियां सज्जाद की जायदाद पर दावी किया चाहते हैं ?

शम०। फ़य्याज़ हुसैन ने अपनी बीबी याने सज्जाद की मा के फ़ौत होने पर बीबी महमूदा से निकाह किया। फ़य्याज़ हुसैन उस वक़्त क़रीब ६० बरस के हो चुके थे। बूढ़े होने की वजह बीबी महमूदा उनसे राज़ी न थीं। मगर उस बूढ़े ने, अपनी बीबी की

राज़ी रखने के लिये अपनी सब जायदाद बीबी महमूदा के नाम में लिख दी थी।

हेमन०। क्या लिख दिया था?

शर्म०। वसीयतनामा।

हेमन। ख़ैर, तो फिर उस का आप को क्या?

शम०। व्याह करने के बरस पांच छ के बाद फय्याज़ हुसैन ने इन्तकाल किया। महमूदा को उनसे लड़का बाला कोई न हुआ। उस वक्त वह जवानी की औज में थी। बर्सात के दर्या सी टलमल करती थी। फिर हमारे साथ—क्या हुआ, समझ ही गये होंगे। आहिस्ते आहिस्ते बात फैलती चली, फिर महमूदा शर्म से मकान छोड़ के कहीं चली गई।

हेमन०। यह तो मैं समझा, मगर हज़रत असल बात तो यह है कि आप उस की जायदाद किस बुनियाद पर दावी करते हैं?

शम०। वही मसल है कि "बारह बरस तक दिल्ली में रह के क्या किया कि भाड़ झोंका।" इतने दिनों से आप मुख़्तारकारी करते आये, तब भी आप को अभी तक मुद्दआ न समझ पड़ा? हमारे साथ आशनाई—समझते हो?—थी। इसी वजह से वह मुझे अपनी जायदाद वसीयत कर गई।

हेमन०। हज़रत, अदालत में तो यह वजह क़ाबिल-इ-समायत नहीं है।

शम०। क्यों, अदालत से यह कहा जाय कि जब सज्जाद ने उसे अपने मकान से निकलवा दिया, तो वह हमारे पास आई। हमने उसे इस शर्त पर मदद देना मन्ज़ूर किया कि उस के शौहर ने जो जाय-